Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 45

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

9 नवम्बर 2017 ई. 19 सफर 1439 हिजरी कमरी

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

**या वह समय था कि आजीविका के विभिन्न माध्यमों के कारण पांच-सात लोगों का खर्च भी मुझ पर एक भार था और या अब वह समय आ गया कि औसत के हिसाब से तीन सौ लोग अपने परिवार सहित तथा इसके साथ अन्य कई निर्धन और दरवेश प्रतिदिन इस लंगर खाना में भोजन करते हैं।**

## उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

**86. छियासीवां निशान** - एक बार मुझे दांत में बहुत पीड़ा हुई। बिल्कुल चैन न था। किसी व्यक्ति से मैंने पूछा कि इसका कोई उपचार है ? उसने कहा - علاج دندان اخراج دندان (कि दांत का उपचार दांत निकालना है) दांत निकालने से मेरा हृदय भयभीत हुआ। उस समय मुझे ऊंघ आ गई और मैं पृथ्वी पर व्याकुलता की स्थिति में बैठा हुआ था और चारपाई की पायंती पर अपना सर रख दिया और थोड़ी सी नींद आ गई। जब मैं जागा तो दर्द का नामोनिशान न था तथा जीभ पर यह इल्हाम जारी था :-

اذا مرضت فھو یشفی

अर्थात् जब तू रोगग्रस्त होता है तो वह तुझे रोगमुक्त करता है। इस पर ख़ुदा का आभार।

**87. सतासीवां निशान** - यह भविष्यवाणी है कि मेरी उस शादी के बारे में जो देहली में हुई थी, ख़ुदा तआला की ओर से मुझे यह इल्हाम हुआ था - الحمدللہ الذی جعل لکم الصھر والنسب۔ अर्थात् उस ख़ुदा की प्रशंसा है जिसने तुम्हें दामादी और वंश दोनों ओर से सम्मान दिया अर्थात् तुम्हारे वंश को भी सभ्य बनाया तथा तुम्हारी पत्नी भी सादात में से आएगी। यह इल्हाम शादी के लिए एक भविष्यवाणी थी जिस से मुझे यह चिन्ता हुई कि शादी के खर्च को मैं क्योंकर पूर्ण करूंगा। उस समय मेरे पास कुछ भी नहीं था तथा मैं सदैव के लिए इस भार को कैसे उठा सकूंगा। अत: मैंने ख़ुदा के दरबार में दुआ की कि इन खर्चों की मुझ में शक्ति नहीं। तब यह इल्हाम हुआ -

ہر چہ باید نو عروسی را ہمہ ساماں کنم
و آنچہ درکار شما باشد عطائے آں کنم

अर्थात् जो कुछ तुम्हें शादी के लिए आवश्यकता होगी। समस्त सामान मैं स्वयं करूंगा और जो कुछ तुम्हें जब भी आवश्यकता होती रहेगी स्वयं देता रहूंगा

अत: ऐसा ही हुआ। शादी के लिए मुझे जो रुपया चाहिए था उन आवश्यक ख़र्चों के लिए मुन्शी अब्दुल हक़ साहिब एकाउन्टेन्ट लाहौर ने मुझे पांच सौ रुपया बतौर क़र्ज़ दिया तथा एक अन्य सज्जन हकीम मुहम्मद शरीफ़ नामक निवासी कलानौर जो अमृतसर में यूनानी उपचार करते थे दो सौ या तीन सौ रुपया मुझे बतौर क़र्ज़ दिया। उस समय मुन्शी अब्दुल हक़ साहिब एकाउन्टेन्ट ने मुझ से कहा कि हिन्दुस्तान में शादी करना ऐसा है जैसा कि हाथी को अपने द्वार पर बांधना।

मैंने उन्हें उत्तर दिया कि इन खर्चों का ख़ुदा ने स्वयं वादा कर दिया है। अत: शादी करने के बाद विजयों का क्रम प्रारंभ हो गया और या वह समय था कि आजीविका के विभिन्न माध्यमों के कारण पांच-सात लोगों का खर्च भी मुझ पर एक भार था और या अब वह समय आ गया कि औसत के हिसाब से तीन सौ लोग अपने परिवार सहित तथा इसके साथ अन्य कई निर्धन और दरवेश प्रतिदिन इस लंगर खाना में भोजन करते हैं। यह भविष्यवाणी लाला शरमपत आर्य तथा मलावामल आर्य निवासी क़ादियान को भी समय से पूर्व सुनाई गई थी तथा शैख़ हामिद अली तथा अन्य परिचितों को इसकी सूचना दी गई थी तथा मुन्शी अब्दुल हक़ एकाउन्टेन्ट लाहौर यद्यपि इस समय विरोधी वर्ग में हैं परन्तु मैं आशा नहीं रखता कि वह इस सच्ची साक्ष्य का इन्कार करें। अल्लाह बहुत जानने वाला है।

**88. अठासीवां निशान** - जब दिलीप सिंह के बारे में अख़बारों में बार-बार वर्णन किया गया था कि वह पंजाब में आएगा। तब मुझे दिखाया गया कि वह कदापि नहीं आएगा अपितु उसे रोका जाएगा। मैंने लगभग पांच सौ लोगों को इस भविष्यवाणी से अवगत किया था तथा एक विज्ञापन में भी जो दो पृष्ठों पर आधारित था संक्षिप्त तौर पर इस भविष्यवाणी को लिखा था। अत: अन्तत: ऐसा ही प्रकटन में आया।

**89. नवासीवां निशान** - मैंने सर सय्यद अहमद खां के बारे में भविष्यवाणी की थी कि अन्तिम आयु में उन्हें कुछ कष्टों का सामना होगा तथा उनकी आयु के थोड़े दिन शेष हैं। यह लेख विज्ञापनों में प्रकाशित कर दिया गया था। अत: इसके पश्चात् एक दुष्ट हिन्दू द्वारा धन ग़बन करने के कारण अन्तिम आयु में उन्हें बहुत शोक और आघात उठाना पड़ा। तदोपरान्त थोड़े दिन ही जीवित रहे तथा इसी शोक ओर आघात से उनका निधन हो गया।

**90. नव्वेवां निशान** - एक बार डाक विभाग के कानून की अवज्ञा का मुक़द्दमा मुझ पर चलाया गया जिसका दण्ड पांच सौ रुपया जुर्माना या छ: माह का कारावास था। प्रत्यक्ष तौर पर बरी होने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता था। अत: दुआ के पश्चात् स्वप्न में ख़ुदा तआला ने मुझ पर प्रकट किया कि वह मुक़द्दमा समाप्त कर दिया जाए। इस मुक़द्दमे का चलाने वाला अमृतसर का एक ईसाई वकील रुलियाराम था। मैंने स्वप्न में यह भी देखा कि उसने मेरी ओर एक सांप भेजा है और मैंने उस सांप को मछली की भांति तल कर उसकी ओर वापस भेज दिया है। चूंकि वह वकील था। इसलिए मेरे मुक़द्दमे का उदाहरण जैसे उसके लिए काम आने वाला था तथा तली हुई मछली का काम देता था। अत: वह मुक़द्दमा पहली पेशी में ही ख़ारिज हो गया।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 246)

☆ ☆ ☆

## 123 वां
# जलसा सालाना क़ादियान
### दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद (नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# पहले मसीह की वफात हो गई है हज़रत मसीह ही इमाम महदी हैं

मुहम्मद हमीद कौसर, कादियान

## (भाग-5)

**मसीह और महदी की सदाकत का निर्विवाद सबूत चाँद और सूरज को रमज़ान के महीने में ग्रहण**

अल्लाह और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (हज़रत) मसीह और महदी (अलैहिस्सलाम) की सदाकत के लिए कुछ निशानों का उल्लेख फरमाया था। ताकि जब हज़रत मसीह और महदी अलैहिस्सलाम का प्रादुर्भव हो तो ज्ञान वाले योग्य उन्हें तुरंत पहचान कर उनकी जमाअत में शामिल हो जाएँ। कुरआन मजीद में इशारा के रूप से और हदीस में स्पष्ट रूप से इस बात का उल्लेख था जब हज़रत मसीह और महदी प्रकट होगा तो रमज़ान के माहीने में सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण लगे गा। अत: कुरआन में वर्णित है وَخَسَفَ الْقَمَرُ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ (सूर: जोड़ें कयामह 75/9) और चंद्रमा को ग्रहण लगेगा। और सूर्य और चंद्रमा दोनों को जमा कर दिया जाए। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि यह आख़री ज़माना में प्रकट होने वाली एक महत्वपूर्ण पेशगोई की तरफ इशारा है अर्थात रमज़ान के महीने में सूर्य और चंद्रमा को ग्रहण लगने की तरफ। (तफसीर सग़ीर सूरह अल्कयामह)

हो सकता है कि यह तो कयामत के बारे में हो। एसे पूछने वाले के लिए लिखा जाता है कि कि कुछ पेशगोइयां दो अर्थों वाली होती हैं. जो कि एक से अधिक बार पूरी हुई हैं? निसन्देह इस का सम्बन्ध छोटी कयामत से भी है और कयामत के निकट के जमाना में हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम के प्रकट होने से भी प्रकट होता है। वरना कयामत के बारे में तो अल्लाह तआला फरमाता है कि वह घड़ी अचानक आ जाएगी اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً (सूरह अलइनआम आयत 6) जब अचानक वह घड़ी आएगी يَوْمَ نَطْوِى السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ (अल-अंबियाय 21/105) जिस दिन हम आकाश को लपेट देंगे जैसे लिखी हुई बातें लपेटी जाती हैं। फिर कहा: जिस दिन तुम उसे देखोगे कि प्रत्येक दूध पिलाने वाली उसे भूल जाएगा जिसे वह दूध पिलाती थी( 22/3)

ऊपर वर्णित आयतों और कुछ दूसरी आयतों के अध्ययन से पता चलता है कि कयामत इतनी शीघ्र आएगी कि इंसान इसका ी कल्पना भी नहीं कर सकती। एसी अचानक घटित होने वाली कयामत के अवसर पर इतना समय कहां होगी कि पहले चांद ग्रहण लगे फिर सूर्य और चांद दोनाम जमा हों।

मूल तथ्य यही है कि यह कयामत के निकट समय में हज़रत मसीह और महदी अलैहिस्सलाम के ज़माने में प्रदर्शित होने वाली चिह्न है। इसमें भविष्यवाणी की गई है कि पहले चाँद को ग्रहण लगेगा फिर सूरज भी ग्रहण में शामिल हो जाएगा। अत: चौथी शताब्दी हिजरी के प्रसिद्ध मुहद्दिस हज़रत अली बिन उमर बग़दादी अद्दार कुतनी (918 ई 995 ई) ने अपनी सुनन दारकुतनी में एक हदीस दर्ज की है कि हज़रत इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

اِنَّ لِمَهْدِيِّنَا اٰيَتَيْنِ لَمْ تَكُوْنَا مُنْذُ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَنْكَسِفُ الْقَمَرُ لِاَوَّلِ لَيْلَةٍ مِّنْ رَّمَضَانَ وَتَنْكَسِفَ الشَّمْسُ فِيْ النِّصْفِ مِنْهُ

(सुनन अद्दार कुतुनी, बाब सिफत सलात)

अनुवाद: यानी हमारे मेहदी के लिए दो निशान हैं और जब से पृथ्वी और आकाश ख़ुदा ने पैदा किए हैं ये दो निशान किसी और मामूर और रसूल के समय प्रदर्शित नहीं हुए। उन में से एक यह है कि महदी मौऊद के ज़माने में रमज़ान के महीने में चाँद ग्रहण उसकी प्रथम रात में होगा यानी तेरहवीं तिथि को और सूर्य ग्रहण उसके ग्रहण के दिनों में से बीच के दिन में होगा। अर्थात इस रमज़ान के महीना की अठ्ठाइसवीं तारीख़ को और ऐसी घटना दुनियाके आरंभ से किसी रसूल या नबीके समय में कभी दिखने में नहीं आई केवल महदी मौऊद के समय में होना निर्धारित है।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से चौदहवीं शताब्दी के आठवें वर्ष 1308 हिजरी (1890 से 1891 ई) में यह घोषणा की कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस (दूसरे) मसीह इब्ने मरियम के आने की खबर दी थी वे मैं ही हूँ।

इसी के साथ ही इज़ाला औहमा के लिखने के समय हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम पर यह भी स्पष्ट हुआ कि हदीसों में मसीह और महदी के आने से संबंधित जो पेशगोईयां मौजूद हैं उनका मिसदाक़ एक ही व्यक्ति है जो कुछ विशेषताओं के अनुसार मसीह होगा और कुछ विशेषताओं के आधार पर महदी होगा।

आपका यह घोषणा करना था कि यह मांग शुरू हो गई कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि मसीह और महदी के प्रकट होने के समय रमज़ान में चंद्रमा और सूर्य को ग्रहण लगेगा। वह ग्रहण कहां है?

इस घोषणा के लगभग तीन साल बाद चौदहवीं सदी के आख़री साल अर्थात दिनांक 13 /रमज़ान 1311 हिजरी मुताबिक़ 21 /मार्च 1894 ई चंद्रमा को ग्रहण लगा और दुनिया ने अपनी आंखों से देख लिया कि अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मसीह और मेहदी की प्रामाणिकता के लिए जिस निशान की पेशगोई फरमाई थी बड़ी शान से पूरी हुई।

इस भव्य निशान की विशेषताएं

1. चांद का ग्रहण उसकी निर्धारित रातों में से पहली रात में होना।
2. सूरज का ग्रहण उस के निर्धारित दिनों के बीच के दिन में होना।
3. रमज़ान का महीना होना।
4. महदी का मौजूद होना।
5. महदी का उसे अपने सबूत में पेश करना।

इन विशेष पहलुओं पर जिस तरीके से भी विचार किया यह स्वीकार किए बिना कोई उपाय नहीं है कि धर्मों के पूरे इतिहास में इसकी कोई मिसाल पेश नहीं की जा सकती। अत: हज़रत मसीह मौऊद और मेहदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया:

" यह दारकुतनी के हदीस मुसलमानों लिए बहुत उपयोगी है। उसने एक तो क़तई तौर पर महदी मौऊद के लिए चौदहवीं सदी का ज़माना निर्धारित कर दिया है और दूसरा इस मेहदी के समर्थन में उसने ऐसा आसमानी चिन्ह प्रस्तुत किया है जिस का तेरह सौ वर्षों से सारा इस्लामी जगत इंतज़ारकर रहा था। सच कहो कि आप लोगों की तबीयतें चाहती थीं कि मेरे महदी होने के दावा के समय आसमान में रमज़ान के महीने में चांद तथा सूर्य ग्रहण हो जाए? इन तेरह सौ वर्षों में बहुतेरे लोगों ने महदी होने का दावा किया लेकिन किसी के लिए यह आसमानी चिन्ह प्रकट न हुआ। बादशाहों को भी जिन्हें महदी बनने का शौक था यह शक्ति न हुई कि किसी तरीका से अपने लिए रमज़ान महीने में चांद सूरज को ग्रहण करवा लेते। बेशक वे लोग करोड़ों रुपया देने को तैयार थे अगर अल्लाह तआला के सिवाय किसी ओर की ताकत में होता कि उनके दावे के दिनों में रमज़ान में चांद सूरज ग्रहण कर देता। मझे उस ख़ुदा की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है कि उस ने मेरी सत्यता करने के लिए आकाश से यह निशान प्रकट किया है ..... अत: मैं ख़ाना काबा में खड़ा होकर कसम खा सकता हूँ कि यह निशान मेरी सत्यता के लिए है न किसी ऐसे व्यक्ति की सत्यता के लिए जिस का अभी विरोध नहीं हुआ और जिस पर काफिर और इंकार करने वाले का शोर नहीं हुआ। और ऐसा ही मैं ख़ाना काबा में खड़ा होकर कसम खा कर कह सकता हूँ कि इस निशान से सदी का निर्धारण हो गया है क्योंकि जबकि यह निशान चौदहवीं सदी में एक व्यक्ति की पुष्टि के लिए प्रकट हुआ तो स्पष्ट हो कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महदी के प्रकट होने के लिए चौदहवीं सदी ही करार दी थी क्योंकि जिस सदी के सिर पर यह भविष्यवाणी पूरी हुई वही सदी महदी के प्रकट होने के लिए माननी पड़ी ताकि दावा और दलील में दूरी पैदा न हो। "

(तोहफा गोलड़विया पृष्ठ 33-34 प्रथम प्रकाशन रूहानी खज़ान जिल्द 17 पेज 142)

सम्माननीय पाठको !! ख़ुदा के लिए ध्यान दाजिए! हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया था कि महदी और मसीह एक ही व्यक्ति के दो नाम हैं। हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सलाम ने घोषणा की थी कि अल्लाह तआला ने मुझे मसीह और महदी बनाकर भेजा है। और फिर उनके दावे की पुष्टि के लिए चंद्रमा और सूर्य को रमज़ान में ग्रहण लगा। इस निशान के प्रकट होने ने स्पष्ट कर दिया कि "महदी और मसीह " का एक ही अस्तित्व होना अनादिकाल से निर्धारित था।

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने इसी निशान के प्रकट होने पर फरमाया:

" सूर्य और चंद्रमा को रमज़ान में ग्रहण लगना क्या यह मेरी अपनी ताकत में था कि मैं अपने समय में कर लेता और जिस तरह से आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसे सच्चे मेहदी का निशान करार दिया था और ख़ुदा तआला ने इस निशान को मेरे दावा के समय पूरा कर दया। अगर में उस की तरफ से नहीं था तो क्या ख़ुदा तआला ने स्वंय दुनिया को गुमराह किया? इसका सोच कर जवाब देना चाहिए। कि मेरे इंकार का प्रभाव कहां तक पड़ता है आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तक़ज़ीब और फिर ख़ुदा तआला का इंकार अनिवार्य आता है इसी तरह से इतने निशान हैं कि इन की संख्या दो चार नहीं बल्कि हज़ारों लाखों तक है तुम किस किस का इंकार करते जाओगो?

(मल्फूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भाग 3 पृष्ठ 652)

(शेष.....)

(अनुवादक शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री)

# ख़ुत्बः जुमअः

**मैं समय समय पर ऐसे ईमान वर्धक घटनाएं वर्णन करता रहता हूँ जो लोगों के अपने अहमदियत स्वीकार करने या उनके अहमदियत स्वीकार करने के बाद आध्यात्मिक और असाधारण अनुभव या जमाअत पर अल्लाह तआला की कृपा और उसके परिणाम स्वरूप जमाअत के ईमान में तरक्की और दृढ़ता पर आधारित होते हैं। बहुत से लोग मुझे लिखते हैं या कहतें हैं कि ऐसे घटनाएं सुनाते रहा करें क्योंकि यह घटनाएं दिलचस्प होने के कारण भी हमारे बच्चों का भी ध्यान आकर्षित करती हैं। युवाओं की धार्मिक और रूहानी स्थिति में बेहतरी का कारण बनते हैं और ख़ुद हमारी अपनी परिस्थितियों में सुधार का करण बनते है, और हमें अपनी स्थिति की बेहतरी की ओर ध्यान केंद्रित करने का कारण बनती हैं। कुछ जन्मजात अहमदी लिखते हैं कि नए आने वालों के ईमान की स्थिति और अल्लाह तआला से उनका जो सम्बन्ध है हमें शर्मिंदा कर रहा होता है और ध्यान दिला रहा होता है कि हम भी ईमान में बढ़ने की कोशिश करें। इसी प्रकार, कुछ नए अहमदी भी यह व्यक्त करते हैं कि इन घटनाओं से हमारे ईमानों में वृद्धि होती है।**

**यूरोप में रहने वाले धर्म की ओर ध्यान केंद्रित करने वाले हैं, उन को भी अल्लाह तआला निशान दिखाता है, उनके ईमान में तरक्की के अल्लाह तआला अपनी ओर से सामान पैदा करता है। यहाँ ब्रिटेन में भी कई नए अहमदी हैं या यहां स्थानीय निवासी हैं जिन्हें बैअत किए बहुत समय हो गया है और हर दिन उनके ईमान तरक्ककी कर रहे हैं जो नए अहमदी हैं या कुछ समय से अहमदियत में शामिल हैं और वे ऐसे अनुभवों से गुज़रते हैं जो अद्भुत हैं और जो उन्हें अल्लाह तआला की हस्ती पर भी विश्वास और ईमान में बढ़ने का माध्यम बनते हैं। जमाअत की सच्चाई भी उन पर खुलती चली जाती है और ख़िलाफत से ईमानदारी और बैअत के संबंध में भी वे लोग बढ़ रहे हैं उनमें पुरुष भी हैं औरतें भी हैं।**

**पश्चिमी देशों में रहने वाले इन लोगों को भी अल्लाह तआला निशान दिखाता है जो धर्म की ओर ध्यान केंद्रित करने वाले हैं। अहमदियत की सच्चाई उन पर प्रकट करता है फिर एक ऐसा वर्ग भी है जो यद्यपि अहमदियत को स्वीकार तो नहीं करता लेकिन इस्लाम की बड़ाई और प्राथमिकता अहमदियत के द्वारा उन पर प्रकट होती है और ऐसी कई घटनाएं हैं जो अपने दौरे के बाद या जलसों के बाद बयान करता रहता हूँ।**

## अल्लाह तआला की तरफ से दुनिया के विभिन्न देशों के लोगों की इस्लाम अहमदियत की तरफ मार्गदर्शन. तब्लीग़ में एम टी ए की भूमिका, नई जमाअतों की स्थापना, कुरबानी और तब्लीग़ की भावना, दुआ की कुबूलियत और सबर तथा दृढ़ता, अल्लाह तआला की तरफ से उन के ईमानों की मज़बूती के लिए जबरदस्त निशान, विरोद्धियों का विरोध और उन से ख़ुदा तआला का इबरत वाला व्वयवहार, जमाअत का किताबों तथा लिट्रेचर का प्रभाव, बैअत के बाद अपने जीवन में स्पष्ट परिवर्तन, रेडियो प्रोग्रामों के द्वारा बैअतों तथा तब्लीग़ का कामों के नेक प्रभाव के बारे में अत्यधिक ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 6 अक्तूबर 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

मैं समय समय पर ऐसे ईमान वर्धक घटनाएं वर्णन करता रहता हूँ जो लोगों के अपने अहमदियत स्वीकार करने या उनके अहमदियत स्वीकार करने के बाद आध्यात्मिक और असाधारण अनुभव या जमाअत पर अल्लाह तआला की कृपा और उसके परिणाम स्वरूप जमाअत के ईमान में तरक्की और दृढ़ता पर आधारित होते हैं। बहुत से लोग मुझे लिखते हैं या कहतें हैं कि ऐसे घटनाएं सुनाते रहा करें क्योंकि यह घटनाएं दिलचस्प होने के कारण भी हमारे बच्चों का भी ध्यान आकर्षित करती हैं। युवाओं की धार्मिक और रूहानी स्थिति में बेहतरी का कारण बनते हैं और ख़ुद हमारी अपनी परिस्थितियों में सुधार का करण बनते है, और हमें अपनी स्थिति की बेहतरी की ओर ध्यान केंद्रित करने का कारण बनती हैं। कुछ जन्मजात अहमदी लिखते हैं कि नए आने वालों के ईमान की स्थिति और अल्लाह तआला से उनका जो सम्बन्ध है हमें शर्मिंदा कर रहा होता है और ध्यान दिला रहा होता है कि हम भी ईमान में बढ़ने की कोशिश करें। इसी प्रकार, कुछ नए अहमदी भी यह व्यक्त करते हैं कि इन घटनाओं से हमारे ईमानों में वृद्धि होती है

लेकिन इसके साथ ही इन पश्चिमी देशों में रहने वाले कुछ लोग हैं या ऐसे लोग हैं जो अपने आप को शिक्षित मानते हैं तरक्की करने वाला समझते हैं ये लोग आए तो पाकिस्तान से हैं लेकिन दुनिया ने उन्हें इस कदर अपने अंदर अवशोषित कर लिया है या वह दुनिया में इस कदर पड़ गए हैं और इसमें अवशोषित हो गए हैं कि अल्लाह तआला की तरफ उन का ध्यान ही नहीं रहता या वैसा ध्यान नहीं जैसा ध्यान रखना एक अहमदी का कर्तव्य है और जो अल्लाह तआला भी अधिकार है और जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार करने का बाद और आप की बैअत में शामिल होने वाले प्रत्येक पर अनिवार्य है। वे अल्लाह तआला और उसकी स्थापित जमाअत की अधिकार देने की ओर प्रथम तो ध्यान नहीं देते हैं, और यदि कोई ध्यान है, तो वे उतना थोड़ा है कि न होने का बराबर है धार्मिक कर्तव्यो अदा करने से ग़ाफिल हैं। ये लोग धार्मिक स्थिति की बेहतरी के बारे में नहीं सोचते या बहुत कम सोचते हैं। ये बातें जो नए आने वाले वर्णन करते हैं या ऐसी घटनाएं जो किसी रंग में आध्यात्मिक विकास का कारण होती हैं यह सुनकर ये लोग आरोप के रंग में ये बातें कर जाते हैं कि इन घटनाएं जो बैअतों और ईमान में तरक्की आदि के हैं ये केवल अफ्रीका या अरब या एशियाई देशों के निवासियों के साथ क्यों हैं? यूरोप में रहने वालों के साथ ऐसी घटनाएं क्यों नहीं हैं? इन्हें क्यों सपनों के माध्यम से मार्गदर्शन नहीं मिलता? उन्हें क्यों धार्मिक किताबें पढ़ कर मार्गदर्शन नहीं मिलता है? उन के रूहानी अनुभव क्यों नहीं हैं?

पहली बात यह है कि यूरोप में रहने वाले धर्म की ओर ध्यान केंद्रित करने वाले हैं, उन को भी अल्लाह तआला निशान दिखाता है, उनके ईमान में तरक्की के अल्लाह तआला अपनी ओर से सामान पैदा करता है। यहाँ ब्रिटेन में भी कई नए अहमदी हैं या यहां स्थानीय निवासी हैं जिन्हें बैअत किए बहुत समय हो गया है और हर दिन उनके ईमान तरक्ककी कर रहे हैं जो नए अहमदी हैं या कुछ समय से अहमदियत में शामिल हैं और वे ऐसे अनुभवों से गुज़रते हैं जो अद्भुत हैं और जो उन्हें अल्लाह तआला की हस्ती पर भी विश्वास और ईमान में बढ़ने का माध्यम बनते हैं। जमाअत की सच्चाई भी उन पर खुलती चली जाती है और ख़िलाफत से ईमानदारी और बैअत के संबंध में भी वे लोग बढ़ रहे हैं उनमें पुरुष भी हैं औरतें भी हैं। लजना,

ख़ुद्दाम, अंसार के इज्तिमाओं में ये लोग अपनी घटनाएं ख़ुद बताते हैं। कुछ लोगों ने एम.टी ए पर भी उल्लेख किया है जो बहुत ईमान वर्धक होते हैं। बहरहाल पश्चिमी देशों में रहने वाले इन लोगों को भी अल्लाह तआला निशान दिखाता है जो धर्म की ओर ध्यान केंद्रित करने वाले हैं। अहमदियत की सच्चाई उन पर प्रकट करता है फिर एक ऐसा वर्ग भी है जो यद्यपि अहमदियत को स्वीकार तो नहीं करता लेकिन इस्लाम की बड़ाई और प्राथमिकता अहमदियत के द्वारा उन पर प्रकट होती है और ऐसी कई घटनाएं हैं जो अपने दौरे के बाद या जलसों के बाद बयान करता रहता हूँ

लेकिन महत्वपूर्ण बात जो याद रखने वाली वह यह है कि अल्लाह तआला उसे मार्गदर्शन करता है जो अल्लाह तआला की ओर जाता है। अगर एक इंसान दुनियादारी में पड़ा हुआ है और अल्लाह तआला का ख़ाना ख़ाली खाली है उसे धर्म और ख़ुदा से कोई संबंध ही नहीं है जो स्वयं अगली दुनिया बर्बाद करने पर तुला हुआ है तो अल्लाह तआला भी ऐसे लोगों की परवाह नहीं करता और वे मार्गदर्शन और हिदायत से वंचित हो जाते हैं।

फिर यह भी है कि नबियों का इतिहास हमें बताता है कि आमतौर पर धर्म की ओर ध्यान देने वाले ग़रीब और कमज़ोर लोग होते हैं जो धर्म को स्वीकार करते हैं और स्वीकार करते हैं। विनम्रों और गरीबों में ही अल्लाह तआला के निकट जाने का भय और अल्लाह तआला का तक्वा अधिक होता है। दुनिया वालों और ताकत वाले यही कहते हैं कि, जिसे अल्लाह तआला ने कुरआन करीम में भी फ़रमाया है कि तुम्हारी हैसियत ही क्या है? तुम्हारे मानने वाले اَرَاذِلُنَا بَادِیَ الرَّاْیِ(हूद :28) हैं अर्थात हमें देखने में वह कमज़ोर व्यक्ति ही नज़र आते हैं अत: दुनियादार तो अहंकार के मारे हुए होते हैं उन्हें एक तो अपने अहंकार के कारण दूसरे सांसारिक कार्यों में डूबे हुए होने के कारण फ़ुर्सत ही नहीं होती कि वह धर्म की ओर ध्यान दें और फिर यूरोप का बहुमत जो है वह तो नास्तिक हो गया है या पश्चिमी देशों की उन्नतिशील देशों की (जो बहुमत है) नास्तिक हो चुके हैं। जब उन्हें अल्लाह तआला की परवाह नहीं तो फिर ख़ुदा तआला को भी इन की क्या परवाह है कि उन का मार्गदर्शन करे?

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इन दुनियादारों का नक्शा खींचते हुए फरमाते हैं कि

"सूरह असर में अल्लाह तआला ने कुफ्फार और मोमिनो के नमूनों को दिखाया है। कुफ्फार का जीवन बिल्कुल चौपायों का जीवन है" (जो जानवरों का जीवन है।) " जिन को खाने और पीने और कामुक भावनाओं के अलावा कोई काम नहीं होता। يَاْكُلُوْنَ كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ

(मुहम्मद 13)(जानवरों की तरह बस खाना पीना उन का काम है) आप फरमाते हैं "मगर देखो एक बैल खाना तो खाले लेकिन हल चलाने के समय बैठ जाए।" (ज़मींदारों में पुराने जमाने में रिवाज था कि हल चलाने के लिए, ज़मीन की खेती के लिए, बैलों का उपयोग करते थे। यहाँ भी पुराने जमाने में घोड़े उपयोग होते थे कि हल चलाने के समय बैठ जाए। काम न करे। इस का केवल खाने का काम हो।" आप फरमाते हैं "इसका नतीजा क्या होगा यही कि ज़मीनदार उसे बूचड़ खाने में जाकर बेच देगा" ( जिब्ह करने वाले को कसाई को दे देगा।) आप फरमाते हैं "इसी तरह उन लोगों के बारे में( जो ख़ुदा तआला के आदेशों की अनुसरण की परवाह नहीं करते और अपनी जीवन दुराचार और बुरे कामों में गुज़ारते हैं।) फरमाता है قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْ لَا دُعَآؤُكُمْ(अल्फुरकान: 78) मेरा रब्ब तुम्हारी क्या परवाह करता है अगर तुम उस की इबादत न करो।"

(मल्फूज़ात भाग 1 पृष्ठ 181 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अत: अल्लाह तआला उन्हीं लोगों की परवाह करता है जो उस की तरफ झुकते हैं और मार्गदर्शन लेते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "सच्चाई बड़ी चीज़ है, इस के बिना यह अच्छे कर्मों की पूर्ति नहीं हो सकता। ख़ुदा तआला अपनी सुन्नत नहीं छोड़ता है और आदमी अपना तरीका नहीं छोड़ता।" (ऐसा बिग़ड़ा हुआ जो है) इसलिए फरमाया है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا

(अल-अन्कुबूत 70) ख़ुदा तआला में होकर जो कोशिश करता है। उस पर अल्लाह तआला अपनी राहें खोलता है।

( मल्फूज़ात जिल्द 3 पृष्ठ 305-306 प्रकाशन 1985 ई यू.के )

इत: जो कोशिश करते हैं इस फिक्र में रहते हैं कि ख़ुदा आला के सच्चे धर्म को तलाश करें, इसे पाने की केशिश करें, वे फिर हिदायत भी पाते हैं, ईमान में भी वृद्धि करते हैं, वे आगे भी तरक्की करते हैं। कुछ लोगों पर अल्लाह तआला उन की कुछ नेकियों के कारण से फज़ल फरमाता है और उन को रास्ता दिखाता है।

श्रद्धा में तरक्की के कुछ उदाहरण एसी रूहानी घटनाएं मैंने आज भी एकत्र किए हैं।

बुर्किना फासो से अमीर साहिब लिखते हैं कि एक गांव लियूकूइन (Likoun) में हमारे स्थानीय मिशनरी तब्लीग़ के लिए गए। ब्लीग़ के बाद जब उन्होंने बैअत लेनी चाही तो बस एक वृद्ध महिला ने बैअत की और मुअल्लिम साहिब ने ग्रामीणों को बताया कि यहां से पंद्रह किलोमीटर दूर हमारी मस्जिद है अगर आप में से किसी को जमाअत अहमदिया के बारे में जानकारी चाहिए तो आप वहां आ सकते हैं और जुम्अ: की नमाज़ के लिए भी व्यवस्था है। हालांकि, बैअत तो इस औरत ने की थी। मुअल्लिम साहिब वर्णन करते हैं कि गांव और इस मस्जिद के बीच जो रासत्ा है वहां एक बरसाती नाला आता और बरसात के कारण से वह पानी से भरा होता है. जब इस बूढ़ी औरत ने बैअत की तो प्रत्येक जुम्अ: में अपनी जाए नमाज़ लेकर जुम्अ: के उद्देश्य से मस्जिद जाने की कोशिश करती और बरसाती नमाज़ देख कर जाए नमाज़ वहीं बिछा लेती और कहती मैंने अहमदियों के साथ नमाज़े जुम्अ: अदा कर ली है। वह कहते हैं कि जब एक महीना के बाद जब बरसाती नाले में पानी कम हुआ तो वह महिला मिशन आई और सारी घटना वर्णन की और इन का यह श्रद्धा अहमदी होने का बाद है। उन्होंने जब यह घटना बताई तो मुअल्लिम उस गांव में फिर तब्लीग़ करने के लिए गए और बांग वालो को बताया कि यह देखो यह बूढ़ी औरत जिस को सच्चाई की तलाश थी उस ने सच्चाई को पा लिया अल्लाह तआला ने उस पर फज़ल फरमाया फिर उस के लिए उस ने कुरबानी दी प्रत्येक जुम्अ: जाती थी और बाहर बैठ कर आ जाती थी पानी के कारण पहुंच नहीं सकती थी परन्तु यह इस की श्रद्धा है जब यह घटना मुअल्लिम ने सुनाई तो कुछ उस के करीबी रिश्तेदार थे उन्होंने वहां इस औरत की श्रद्धा को देख कर और तीस आदमियों ने बैअत की और इस प्रकार अल्लाह तआला ने उन के लिए हिदायत के सामान पैदा किए।

फिर ऐसे लोग जो ख़वाबों के माध्यम से कई बार अहमदी होते हैं।

एक फ्रांसीसी महिला आसिया साहिब हैं। उन्होंने बैअत की। वह कहती हैं कि मैं अपनी बैअत का विवरण इस कारण से बताना चाहती हूं कि शायद आप मुझ से ख़ुश हों और मुझे अपनी मुबारक जमाअत में शामिल फरमा लें। कहती हैं एक दिन इंटरनेट पर अपनी आदत अनुसार कुछ नए चैनलों की खोज में थी कि मुझे हवारुल मुबाशिर का लिंक मिल गया जहां वफाते मसीह का मज़मून चल रहा था और मैं हर प्रकार के संदेह से खाली और ईमान से भरे सभ्य तरीके और शक्तिशाली और अविश्वसनीय दलीलें सुन कर आश्चर्यचकित था। कहती हैं उस से कुछ दिन पहले मैंने सपना देखा था कि मैं एक अंधेरे कुएं में गिरने जा रही थी और मैंने कुओं के मुंढेरों को दोनों हाथों से पकड़ा हुआ था और पैर नीचे लटका रहे थे। मैंने अचानक ऊपर देखा तो तीन चार सफेद सफेद पक्षियों को देखा, जिनके रंग बहुत सफेद थे, लेकिन मुझे नहीं पता कि वे कौन हैं ये पक्षी मुझे बचाने की कोशिश कर रहे थे शुरू में, मुझे यह सपना नहीं समझ आया लेकिन बाद में यह पता चला कि यह पैनल के सदस्य हैं जो पक्षियों के रूप में प्रदर्शित होते हैं शुरू में मुझ पर यह स्पष्ट नहीं था कि इस जमाअत के संस्थापक ने मसीह और महदी होने का दावा किया है, लेकिन मुझे संदेह सा पैदा हुआ लेकिन फिर मैंने जमाअत की पुस्तकें विशेष कर के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों के अध्ययन का फैसला किया जिन मे मुझे कोई इस्लाम के ख़िलाफ बात नज़र नहीं आई बल्कि इसके विपरीत मुझे आप की ज़ात में इस्लाम, मुसलमानों और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पूरी ताकत के साथ रक्षा करने वाला मज़बूत पहलवान नज़र आया जो इन पुस्तकों से इस्लाम के दुश्मनों पर इस्लाम का रौब स्थापित कहता है। कहती हैं फिर मैंने इस्तिख़ारा किया, और दो दिन बाद, मेरी एक सहेली ने बताया कि इस ने ख़वाब में देखा कि मैं और वह सहेली जो मेरी सास के घर में हैं और मैं विभिन्न कमरों में से एक विशेष कमरे की तलाश में हूं। इस पर मुझे एक रौशन और नूरानी आरामदायक कमरा नज़र आया जिस पर मैंने कहा कि मुझे यह कमरा अच्छा लगा और मैं यहां रहूंगी। कहती हैं कि मैंने ख़वाब से यह नेक अर्थ निकाला कि मुझे जमाअत में शामिल होना चाहिए। अत: बैअत कर ली।

एक और महिला तुर्की में मीरा साहिबा हैं, वह कहती है कि मैं अपनी बैअत के विवरण को बताना चाहती हूं। 2010 ई में जमाअत से परिचय हुआ और शामिल होने की तौफीक़ मिली। मैंने देखा कि मेरे पति एम टी ए अल्अरबिया को बहुत शौक से देखते थे, इसलिए मैंने भी देखना शुरू कर दिया और कई बार उन की ग़ैर मूजूदगी में भी एम टी देखती रहती थी। मेरे पति मुझे कहते कि तसल्ली से बैअत कर लो

तो कहती कि मैं यह ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता। मेरा परिवार बड़ा है। घर की बहुत जिम्मेदारियां हैं फिर मैं ने दज्जाल के बारे में जमाअत की तैयार की गई फिल्म देखी और तफसीर बड़ी तार्किक और उचित मालूम हुई। फिर और एम टी ए देखने लगी और हवार के प्रोग्राम देखने लगी और तहज्जुद नियमित पढ़ने लगी। इस के बाद एक बार अब्दुल कादिर औदह साहिब ने दौरा किया तो मैंने बैअत कर ली। तब मेरी बहू और बेटियों ने भी बैअत का वादा किया। हम जमाअत के मुद्दों पर चर्चा करते कि यह वास्तविक इस्लाम है। कहती हैं कि मैं जिस दिन मैं बैअत की मैं सपने में देखा कि सूरे कहफ़ की आयतें पढ़ रही हूँ उस पर मुझे ईमान हो गया कि अल्लाह तआला हमें दज्जाल के बुराई से बचाएगा और इमाम महदी के सहायक और अंसार में बनोंगी। ख़ुदा का शुक्र है कि उस ने ईमान प्रदान किया। अल्लाह करे कि मैं सि ज़िम्मेदारी को पूरा करने वाली बनूं।

तो इस प्रकार वह ख़ुद घटनाएं लिखती हैं और दुआओं की तहरीक की इच्छा भी करती हैं।

फिर नई जमाअतों की स्थापना की कुछ घटनाएं होती हैं। अल्लाह तआला किस प्रकार जमाअतों को स्थापित करता है। अब्दुल कुद्दूस साहिब बेनिन के मुबल्लिग़ हैं वह लिखते हैं कि मुअल्लिम ज़कारिया साहिब एक गांव में तब्लीग़ के लिए गए वहाँ एक दोस्त ने कहा कि इस समय लोग कामकाज के लिए गांव से बाहर हैं आप शुक्रवार के दिन आएं तो लोग यहां मौजूद होंगे तो जब मुअल्लिम साहिब शुक्रवार के दिन फिर आ गए तो मुअल्लिम साहिब ने मस्जिद में प्रवेश करने के बाद दो नवाफल अदा किए और इमाम साहिब और गांव की समिति की अनुमति से तब्लीग़ शुरू की। मुअल्लिम ने सूरे फातिहा की तफ्सरी और इमाम महदी की आगमन से संबंधित भाषण दिया और लोग भाषण के दौरान अल्लाह हो अकबर के नारे बुलंद करते रहे। जब तब्लीग़ समाप्त हो गई तो उनकी मस्जिद कमेटी के अध्यक्ष साहिब कहने लगे कि मैं मुसलमान पैदा हुआ हूं लेकिन आज तक मैं सूरे फातिहा की इस तरह की तफसीर नहीं सुनी। अगर जमाअत अहमदिया की यही शिक्षा है तो मैं सबको बधाई देता हूँ कि हम ने इस जमाअत को स्वीकार करना है, इमाम समेत गांव के मुस्लिम संगठन के सभी लोगों ने जमाअत अहमदिया को स्वीकार किया और इस प्रकार एक नई जमाअत बनाई गई। कहतें हैं कि वहां कि गांव के मौलवी ने गंभीर प्रतिक्रिया दिखायी थी। जब हमारा मुअल्लिम घर लौट आया, तो मौलवी ने उसे फोन किया और कहा, "इस गांव और मस्जिद में वापस मत आना।" कुछ समय बाद जब ख़ुद्दामुल अहमदिया बेनिन के सालाना इज्तिमा के सिलसिले में हमारे मुअल्लिम फिर वहाँ गए और ख़ुद्दाम सो शामिल होने का अनुरोध किया तो मौलवी ने फिर से उन्हें रोका और अपने साथ ख़ुद्दाम को ले जाने से मना किया लेकिन नए अहमदी ख़ुद्दाम ने मौलवी को अस्वीकार कर दिया और सभी इज्तिमा में शामिल हुए। इस प्रकार अल्लाह तआला विरोद्धी मौलवियों को अपमानित करता है और नई जमाअतें भी स्थापित करता है।

नई जमाअतों की स्थापना के बारे में ही एक और घटना है, जो अरोशा क्षेत्र की है। मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि अल्लाह तआला की कृपा से एक नए क्षेत्र में अहमदियत की स्थापना हुई है। सामे ज़िला के एक गांव कससाानी में पहले कोई अहमदी नहीं थी। यहां बार बार दौरे करने की तौफ़ीक़ मिली। बहुत अधिक पम्फल्ट बांटे गए। इसी प्रकार जमाअत को अख़बार और किताबें भी इस इलाके में बांटी गईं। जिसके परिणाम स्वरूप अब अल्लाह तआला की कृपा से न केवल बैअतें होना शुरू हो गई हैं बल्कि नियमित जमाअत का गठन हो चुका है और अल्लाह तआला की कृपा से यहां मस्जिद के लिए ज़मीन ख़रीदी जा रहा है और स्थानीय लोग मस्जिद निर्माण के लिए खुद ईंटें तैयार कर रहे हैं लेकिन इसके साथ दूसरे मुसलमानों से विरोध का सिलसिला भी शुरू हो गया है विरोधी जमाअत के ख़िलाफ उपद्रव फैलाने और बेहूदगी करने लग गए हैं। कहते हैं हम ने प्रशासन की अनुमति से गांव में मुबाहसा का प्रबंध करने में कामयाब रहे। सारे गांव में एलान करवाया और सुन्नी मौलवी साहिबान को आमंत्रित किया कि अगर वे समझते हैं कि वे सच्चे हैं आएं और सबके सामने बात कर लेते हैं अत: निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मुनाज़रा आयोजित हुआ और कई ग़ैर अहमदी लोग इसमें शामिल हुए लेकिन सुन्नी मौलवियों में से कोई भी मौजूद नहीं था। अत: गांव के लोगों को पता चला कि मौलिवयों के पास बल्कि अराजकता फैलाने के कुछ भी नहीं है।

अल्लाह तआला विभिन्न साधनों से लोगों के मार्गदर्शन का साधन बनाता है, जो वास्तव में धर्म की तरफ ध्यान रखते हैं। बुर्किना फासो अमीर साहिब लिखते हैं कि एक गांव नाबीर में तब्लीग़ के लिए गए वहाँ अल्लाह तआला की कृपा से पर्याप्त बैअतें हासिल हुईं। वहाँ एक कच्ची मस्जिद में एक मुअल्लिम साहिब को तैनात किया गया। नियमित जुम्अ: की नमाज़ शुरू की गई लेकिन ग़ैर अहमदी मौलवी ने अराजकता शुरू की और ठीक जुम्अ: की नमाज़ के समय मस्जिद में आकर लोगों को भड़काया ताकि अहमदियत से दूर करने की कोशशि करे। लेकिन जमाअत में लगातार वृद्धि होती रही अंत मौलवी से कुछ न बन पाया तो उसने जमाअत अहमदिया की मस्जिद के सामने अपनी एक मस्जिद बनाई और घोषणा की कि अहमदिया मस्जिद अब केवल पंक्तियाँ रखने वाला स्टोर बन जाएगा और वहाँ कोई नमाज़ी नहीं आएगा लेकिन हुआ इसके उलट। वहां उस की मस्जिद में तो केवल घर के रिश्तेदार ही नमाज़ पढ़ते हैं और हमारी मस्जिद में अल्लाह तआला की कृपा से नमाज़ियों में वृद्धि होना शुरू हुई और यह लिखते हैं कि जुम्अ: की नमाज़ में छोटी से गहह में उपस्थिति दो सौ से अढ़ाई सौ होती है।

दुआएं स्वाकीर करने के नज़ारें अल्लाह तआला किस प्रकार दिखाता है।

मुबल्लिग़ सिलसिला बेनिन अनसर साहिब लिखते हैं कि एक गांव आसियो में दो सौ बैअतें हुई थीं अब इस गांव में हर शुक्रवार और मंगलवार को प्रशिक्षण कक्षा होती है वहाँ के सदर साहिब की बेटी जो किसी दूसरे गांव में रहती थी सख्त बीमार हो गई और रोग के कारण शरीर शरीर पूरी तरह असहज हो गया। कहते हैं जब मैं उन के गांव गया तो सदर साहिब ने कहा कि दुआ करें और समय के ख़लीफा को भी दुआ के लिए लिखें। तो कहतें हैं कि उन्होंने मुझे यहां भी दुआ के लिए लिखा। वह कहते हैं कि जब अगले दिन में वहां गया, तो लोगों ने बताया कि उस लड़की ने बोलना और हरकत करना बंद कर दिया। उस लड़की को अस्पताल भी लेकर गए थे लेकिन किसी उपचार से कोई लाभ नहीं हो रहा था फिर निराश होकर उसे घर वापस ले आए एक मौलवी को बुलाया जिसने लड़की को दम क्या इसके बदले उसने चालीस हज़ार फ्रैंक और एक बकरा लिया लेकिन लड़की को आराम नहीं आया फिर एक और मौलवी को बुलाया भी इतनी बड़ी रकम ली लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। कहते हैं हम मौलवियों से निराश हो गए थे। हमने सोचा कि उस ने मर तो जाना ही है फिर लड़की को उस के पिता के घर छोड़ आते हैं अत: जब लड़की को यहां लाए तो लड़की के पिता ने जमाअत को तहरीक की। मुझे भी दुआ के लिए ख़त लिखा और कहते हैं कि एक दिन के बाद ही लड़की ने हरकत करना शुरू कर दी और अगली शाम को रोग पूरी तरह से उस के शरीर से बाहर निकल गया और कोई भी सोच नहीं सकता था कि यह ज़िन्दा बचेगी परन्तु अब इसे देख कर कोई नहीं कह सकता कि यह लड़की कभी बीमार भी हुई थी। तो यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की दलील है।

बुर्किना फासो के एक मुअल्लिम सेनदे करीम साहिब लिखते हैं तब्लीग़ करने के लिए हम एक गांव गए। जब हम वहां पहुंचे तो हम ने वहाँ तब्लीग़ की अनुमति चाही तो गांव के इमाम ने कहा कि हमारे पास अपने मुबल्लिग़ पहले भी आए थे और हम में से काफी लोगों ने बैअत भी की थी लेकिन सभी ग्रामीणों ने बैअत नहीं की थी इसलिए आप तब्लीग़ कर सकते हैं? हो सकता है कि आपकी तब्लीग़ से जो रह गए थे वे बैअत कर लें। अत: काफी देर प्रश्न और उत्तर होते रहे अंत में उनके बड़े कहने लगे कि हम अहमदी तो हो गए थे लेकिन फिर भी कुछ बातें अब स्पष्ट नहीं थीं लेकिन आज मैंने ख़ुद देख लिया है कि अगर आज इस्लाम की कोई सही अर्थ में सेवा कर रहा है तो आप लोग कर रहे हैं क्योंकि आप स्थायी रूप से एक काम में लगे हुए हैं और थकते नहीं। अत: हम आप के साथ हैं अत: गांव के इमाम ने लोगों से कहा कि जिन लोगों ने पहले बैअत नहीं की थी वे अब कर लें और इस प्रकार गांव के और 73 लोगों ने बैअत कर ली।

अब अल्लाह तआला अगर उन के दिल खोल रहा है और उन्हें सहीह इस्लाम को स्वीकार करने की तौफीक दे रहा है तो यह अल्लाह तआला का उन लोगों पर फज़ल है इस पर कहना कि क्यों केवल वहीं क्यों हो रहे हैं? इसलिए कि उन को धर्म की फिक्र है अपनी चिन्ता है सारी सारी रात बैठ कर धार्मिक मज्लिसें सुनते हैं। यहां किसी को समय नहीं के धर्म के लिए इतना समय दे और धार्मिक मज्लिसों में बैठे और सवाल तथा जवाब करे।

भारत के नायब नाज़िर दावत इलल्लाह लिखते हैं कि लखीमपुर शहर में एक दोस्त अब्दुस्सत्तार साहिब के साथ संपर्क कायम हुआ जब उनके साथ बैठक हुई तो वह मिल कर फूट फूट कर रोने लगे उन्होंने बताया कि हम लोग करन पुर गांव के रहने वाले थे हमारे पचास बीघे ज़मीन थी अच्छा व्यवसाय था हम लोग बारह साल पहले बैअत कर के जमाअत में शामिल हुए थे लेकिन बैअत के बाद हमारे इतना विरोध हुआ कि विरोधियों ने हमारे घर पर पथराव किया और हमें हमारे घरों

से निकाल दिया। मेरे बेटे को मार मार कर ज़ख्मी कर दिया और मेरी पत्नी का हाथ तोड़ दिया। इतना विरोध हुआ कि हमें अपना घर और ज़मीन को आधी कीमत पर बेचना पड़ा और वहां से निकलना पड़ा। सारा कारोबार नष्ट हो गए। हम वहां से एक छोटे से घर में लखीमपुर शहर में चले गए, लेकिन विरोधियों ने हमारा पीछा नहीं छोड़ा, वे यहां पहुंचे और शहर के मुसलमानों को गुमराह कर रहे थे। कोई भी पूरे शहर में हमारे साथ बात नहीं करता था। आते जाते हमें तंग किया जाता। इस दौरान हमारा जमाअत से संपर्क भी टूट गया लेकिन अल्लाह तआला ने हमें जमाअत अहमदिया का सदाकत का एक भव्य निशान दिखाया कि हमारी विरोध में आगे रहने वाले विरोधी जो एक बस में सवार होकर किसी शादी में जा रहे थे उनकी बस रेलवे गेट पर फंस गई थी और एक ट्रेन से टकरा गई जिसमें 21 लोगों की मौत हो गई और बचे हुए लोग बुरी तरह घायल हो गए। लाशों का इतना बुरी हालत थी कि पहचानी ही नहीं जाती थी। दूर दूर तक जिस्म के हिस्से फैले हुए थे। विरोधियों में से एक एक घर में से नौ नौ लाशें निकलीं। जब हमें इस घटना का पचा चला तो हम ज़ख्मियों से मिलने हस्पताल गए उस समय विरोधियों के रिश्तेदार शर्म के मारे हम मुंह छुपाने लगे। इस दुर्घटना के बाद, सखीमपुर शहर के एक बड़ी मस्जिद के एक मौलवी ने उन विरोधियों को जो बच गए थे और अब्दुल सतार साहिब के परिवार को मस्जिद में बुलाया। मौलवी साहिब ने विरोधियों से कहा कि आप लोग इन अहमदियों से माफी मांगें और उन का विरोध छोड़ दें। आप लोगों ने जो इन से सम्बन्ध विच्छेद किया हुआ है उसे भी समाप्त कर दें। अत: इस दुर्घटना के बाद विरोध काफी शांत हो गया। कहते हैं कि हमारा जमाअत से सम्पर्क टूटा हुआ था परन्तु दिल से अहमदी ही थे अत: इस सम्पर्क के जुड़ने पर बड़े हुए और इन सब ने नई बैअत की। जो लोगएक बार अहमदी होते हैं और वास्तव में समझ क अहमदी होते हैं, तो अल्लाह तआला उन के ईमानों में मज़बूती पैदा करता है।

कोसोवो के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक प्रसिद्ध विद्वान शीवचित करासंची (Shefqet Kransiqui) साहिब जो लंबे समय से देश की राजधानी में सबसे बड़ी मस्जिद का इमाम था। वहां के विश्वविद्यालय में इस्लाम विभाग में पढ़ाता भी था और देश में बहुत लोकप्रिय भी था। उस ने कई सालों पहले, रेडियो कार्यक्रमों के दौरान अहमदिया जमाअत के ख़िलाफ कई रेडियो कार्यक्रम किए और इंटरनेट पर भी जमाअत के ख़िलाफ प्रोपगंडा किया। अल्लाह तआला ने उस का बदला ऐसे तरीके से लिया कि पहले तो उस के आचरण पर इलज़ाम लगने के कारण उस को विश्वविद्यालय से निलंबित कर दिया गया फिर पुलिस ने उन्हें आतंक में गिरफ्तार कर लिया और काले धन में गिरफ्तार कर लिया। कई दिन उन्हें कैद में रखा। उस को जामेए मस्जिद की इमामत से हटा दिया गया था। सभी जिम्मेदारियां उस से वापस ले ली गईं देश के अंदर कुछ अन्य इमाम भी जमाअत के खिलाफ जनता को भड़काया करते थे इस साल इन इमामों को धार्मिक घृणा फैलाने और समाज में अशांति पैदा करने के आरोप में हिरासत में ले लिया गया। कहते हैं आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि देख से प्रमुख उलमा को इतना अपमान और प्रताड़ना का मुंह देखना पड़े और इस कारण से फिर वहां के जो अहमदी हैं उन को अल्लाह तआला ने ईमान में दृढ़ता प्रदान फरमाई।

नए अहमदियों पर उत्पीड़न और फिर ईमान पर स्थापित कहना का एक उदाहरण पहले मैंने भारत का वर्णन की। और उदाहरण यूपी के एक गांव का था कि वहाँ सारे गांव ने बैअत की थी लेकिन बाद में विरोध के कारण पूरा गांव पीछे हट गया था लेकिन एक दोस्त मोहम्मद हनीफ़ साहिब अहमदियत पर कायम रहे विरोधियों ने उनका बहुत विरोध किया लेकिन उन्होंने अपने ईमान को बचाया इस विरोध के दौरान, हनीफ साहिब के बेटे की वफात हो गई, विरोधियों ने अपने कब्रिस्तान में दफन करने और नमाज़ जनाज़ा पढ़ाने से इंकार कर दिया और उसे कहा कि अगर तुम अहमदियत से तौब: करोगे तो तभी तुम्हारे बेटेका जनाज़ा और कब्रिस्तान में दफनाने की अनुमति देंगे लेकिन हनीफ साहिब मज़बूती के साथ ईमान पर स्थापित रहे और अपने बच्चों को साथ लेकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ कर अपने बेटे को अपने ही घर में दफन कर दिया इसलिए जब उन्हें जमाअत से संपर्क बहाल हुआ तो मिलकर रोने लगे और सारे घर के साथ मिलकर नई बैअत की। जब उन से पूछा गया कि आप ने केन्द्र से सम्पर्क क्यों न किया तो कहने लगे कि लोगों ने हमें बताया कि कादियानियत का केन्द्र तो लखनऊ में जो था वह तो उजड़ गया है उनका मदरसा भी बंद हो गया है कोई नहीं रहा और कादियान के संपर्क हमारे पास था नहीं लेकिन इसके बावजूद जो ईमान में मजबूती थी वह कायम रही। अल्लाह तआला ने उन्हें हिदायत देनी था इस लिए मार्गदर्शन किया जो किसी उद्देश्य के लिए अहमदी हुए थे और बैअतें की थीं वे सारे फिर गए और जमाअत छोड़ दी।

आइवरी कोस्ट में भी जमाअत के कारण से ज़ुल्म का एक उदाहरण है। एक नए अहमदी मुबासिको (Bamba Sekou) साहिब ने बैअत करने के बाद अपने भाइयों को पत्र क द्वोरा अपने अहमदियत स्वीकार करने की ख़बर दी उनके भाइयों ने उत्तर दिया कि यदि तीन दिन के भीतर वह अहमदियत से वापस न आए तो इस्लामी शरीयत के अनुसार उनका सिर कलम कर दिया जाएगा। इसी तरह व्यापार में उनके सहयोगी जो कि वहाबिया पंथ से संबंधित थे उन्हें उनका हिस्सा देकर व्यावसायिक साझेदारी से अलग हो गए लेकिन महोदय ने किसी प्रकार के नुकसान या विरोध की परवाह नहीं की और मजबूती से अहमदियत पर स्थापित रहे।

फ्रांस के अमीर साहिब कहते हैं कि अब अल्लाह तआला की कृपा से अल्लाह तआला ने जो एम टी ए के माध्यम से दुनिया से संपर्क की सुविधा प्रदान फ़रमाई है और जिस तरह मेरे ख़ुत्बे हर जगह जाते हैं वे ग़ैर भी सुनते हैं इसके प्रभाव की एक घटना अमीर साहिब वर्णन करते हैं कि एक दोस्त दानियाल साहिब बैअत करते सिलसिले में दाख़िल हुए। वह वर्णन करते हैं कि बैअत से पहले वह मायूटे द्वीप में रहते थे जो फ्रांस का एक द्वीप है वहां मायूटे में वह जिस मस्जिद में जाते थे उस मस्जिद के इमाम साहिब प्राय एम टी ए पर मेरा ख़ुत्बा सुनते थे ख़ुत्बा में मैंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफात के बारे में वर्णन किया था जिस से कहते हैं मैं बहुत प्रभावित हुआ मस्जिद के इमाम ने हमें जमाअत अहमदिया का परिचय करवाया। वहां का इमाम शरीफ था। व्यक्तिगत उद्देश्य नहीं था कहतें हैं उस ने मुझे कहा कि दुअ करें कि अल्लाह तआला हों हमें सीधा रास्ता दिखाए इन बातों का कहतें हैं मुझे पर बहुत प्रभाव हुआ और इमाम साहिब ने हमें जमाअत अहमदिया के बारे में जानकारी इकट्ठा करने को कहा। अत: इन्टरनेट पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में जानकारी इकट्ठा करनी शुरू कर दी तो फ्रैन्च भाषा में जमाअत के वीडीयूज़ सामने आ गईं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वफात के बारे में थीं। इस तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में जो ख़ुत्बा दिया था इस का यू टुयूब में फ्रैन्च भाषा में अनुवाद भी मिल गया। अत: कहते हैं कि इस के बाद मैंने बैअत कर ली। अमीर साहिब लिखते हैं कि अब महोदय ने फ्रांस के मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब का मायूटे के इमाम साहिब से सम्पर्क करवाया है अत: इस इमाम को फ्रांस से जमाअत की किताबें और रसाले भिजवाई गई हैं। अल्लाह के फज़ल के साथ वह इमाम भी सत्तर अदमियों के साथ बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए हैं। अल्लाह तआला ने फज़ल किया और हज़ारों मील दर एक छोटे से द्वीप में ख़ुत्बा के माध्यम से ही तब्लीग़ का काम हो गया और यह भी अल्लाह तआला की इहसान है जो एम टी ए के माध्यम से उस ने फरमाया है।

किताबों को गैर-मुस्लिम पर क्या प्रभाव होता है। कांगो ब्राज़वील से मुअल्लिम लिखते हैं कि एक नए अहमदी ओम बीमा साहिब ने अपनी बैअत की घटना बताते हुए कहा कि एक दिन मैं अपने छोटे भाई के घर गया तो उसके पास फ्रेंच भाषा में एक पुस्तक देखी जिसका शीर्षक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की सच्ची कहानी था। यह कहते हैं मैंने इस से यह किताब पढ़ने के लिए ली। मैंने अपने पादरी से इस किताब का उल्लेख किया है, पादरी ने कहा कि बिना किसी विचार के को किताब नहीं पढ़नी चाहिए। ईमान नष्ट होने का खतरा होता है लेकिन जब मैंने उस किताब को पढ़ा तो मेरी आँखें खुल गईं और मुझे पता चल गया कि पादरी लोग हम से बहुत कुछ छुपाते हैं। मैंने दोबारा किताब को पढ़ा और बाईबल से हवाले भी जाँच किए।। मैंने अपने भाई से संपर्क किया, जो पहले ही अहमदिया जमाअत में प्रवेश कर चुका था। मैंने उससे पूछा कि आपको यह किताब कहां मिली है। और यह लोग कौन हैं है उसने मुझे बताया कि यह जमाअत अहमदिया की लिखी हुई किताब है और कुछ दिनों तक कहते हैं मैं जमाअत अहमदिया के मिशन हाउस जाना है जहां जर्मनी में जलसा होने वाला है वहाँ जलसा सुनेंगे तुम भी मेरे साथ चलो ख़ुद देख लेना कि कौन लोग हैं। इस्लाम के बारे में सवाल वहीं पूछ लेना कहते हैं। कहते हैं हम मिशन

हाउस गए वहाँ जलसा जर्मनी के माहौल को देखा और कहते हैं कि आप के ख़त्बे सुने और उन को देख कर मैं पूरा बदल गया। इस के बाद कहते हैं कि अल्लाह तआला कि फज़ल से मैंने जर्मनी जलसा के अवसर पर ही बैअत कर ली। कहते हैं अब मैं बहुत ख़ुश हूं और मैं अनुभव कर रहा हूं कि ज़िन्दगी का भी कोई उद्देश्य है जो अब पूरा हुआ।

बैअत के बाद, लोगों में असाधारण परिवर्तन होता है। उज़्बेकिस्तान के एक नए अहमदी दोस्त ज़हीर वाहिद वूच साहिब बताते हैं कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सूर: फातिहा की तफशीर जानने के बाद मेरा तो नमाज़ पढ़ने का तरीका ही बदल गया है अब मुझे नमाज़ में वह कुछ मिलता है जो पहले कभी नहीं मिलता था। खासकर के मुझे इस हदीस की व्याख्या ने बहुत लाभ दिया जो पहले मुझे समझ नहीं आती थी और जिस में इहसान का अर्थ बताया गया था।

कोसोवो के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि नए अहमदी श्रद्धा और ईमानदारी तथा बलिदान में रात दिन बढ़ रहे हैं। एक दोस्त नज़ीर बालाए साहिब शहर की नगर पालिका में एक महत्त्वपूर्ण विभाग के निगरान हैं लेकिन अहमदियत स्वीकार करने के बाद बावजूद अपनी व्यस्तता के दिन रात जमाअत की सेवा में व्यस्त रहते हैं कोई तब्लीग़ी या प्रशिक्षण कार्यक्रम हो तो उसके लिए हर समय तैयार रहते हैं पड़ोसी देश में वक्फे आरज़ी करने के लिए भी हमेशा तैयार रहते हैं महोदय द्वारा कई नए तब्लीग़ी संपर्क पैदा हुए हैं एक बार एक तब्लीग़ी कार्यक्रम का आयोजन किया गया और गंभीर रूप से बीमार होने के बावजूद तब्लीग़ी कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान ही जब अधिक कमजोरी महसूस तो घर गए और अपनी पत्नी जो कि नर्स हैं उनसे ड्रिप लगवाई और जब सुधार महसूस हुआ तो फिर ज़िद की कि तब्लीग़ के कार्यक्रम में शामिल होऊंगा। अत: शामिल हुए और देर रात तक तब्लीग़ कार्यक्रम में व्यस्त रहे। अत: यह इन लोगों का तब्लीग़ के बारे में जोश और भावना है जो नए अहमदी हो रहे हैं।

कांगो ब्राज़ोवील के मुअल्लिम सिलसिला इब्राहीम साहिब लिखते हैं कि एक गांव में एक नंबरदार है वह कहता है कि मेरा दामाद का मेरे साथ व्यवहार ठीक नहीं था और दैनिक शाम को शराब पीकर गाली गलोच करता था और मेरे साथ अपमानजनक बात करता था लेकिन मैंने देखा है कि जब से उसने इस्लाम और अहमदियत को स्वीकार किया है उसने शराब पीना और गाली गलोच करना बिल्कुल छोड़ दिया है और यह मेरे लिए बड़ी हैरानी की बात है। यह परिवर्तन अल्लाह तआला उन में पैदा फरमाया है।

बुर्किना फासो के नए अहमदी दोस्त सूरी हमीद साहिब बताते हैं कि जब ग़ैर अहमदी था तो कई कठिनाइयों में फंसा हुआ था। मेरे यहाँ औलाद तो होती लेकिन मर जाती। पीरों फकीरों के पास जाता तो कोई कहता बकरी लाओ और कोई कहता कि मुर्ग़े बुतों के स्थान पर ज़िब्ह करो को। इस प्रकार ही तुम्हारी समस्याएं हल हो जाएंगी। जब मैंने जमाअत अहमदिया का संदेश सुना तो यह बहुत अच्छा था और जमाअत में शामिल हो गया। और वह पैसे जो मैं मौलवियों और बुतों के सामने चढ़ाया करता था, उस को चन्दा में देना शुरू किया। मैंने देखा कि मेरी सारी समस्याओं का समाधान होता गया। अल्लाह तआला ने मुझे जीवित संतान भी प्रदान की कुछ समय के बाद जब मौलवियों ने देखा कि यह व्यक्ति अब हमारे पास नहीं आता और उन्हें मालूम हो गया कि यह अहमदी हो गया है तो उस पर मौलवी ने कहा, तुम्हारे अपने वाप दादा जिस धर्म पर स्थापित थे उसे छोड़ क्यों दिया? कहते हैं मैंने उन्हें बताया कि मैं अब बहुत खुश हूं। ख़ुदा ने मुझे जीवन देने वाली औलाद प्रदान की है। मैं चन्दा देता हूं और ख़ुदा मुझे वापस दुगना कर के देता है। यह सब जमाअत अहमदिया की बरकतें हैं अल्लाह तआला ने मेरे घर के हालात बदल दिए हैं जो काम करता हूँ पूरा हो जाता है इसलिए अल्लाह तआला ने ही मुझे इस रास्ता पर डाला है जो पूर्वजों का रास्ता था वह गुमराही का रास्ता था।

फिर रेडियो द्वारा बैअतें होती हैं बेनिन के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि मेरे क्षेत्र के एक गांव से एक ईसाई दोस्त सवै जूराफन एक दिन हमारे रेडियो कार्यक्रम के दौरान फोन करके हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पुनरागमन से संबंधित सवाल किया और अपने हाँ आने का निमंत्रण भी दिया। इस के बाद में जब उनसे मुलाकात हुई और उनके सवालों के जवाब दिए और तर्कसंगत तर्क और बाइबल के हवाले से उत्तर दिए गए तो अल्लाह तआला की कृपा से उन की शंकाएं दूर हो गईं और उन्होंने स्वीकार किया कि जमाअत अहमदिया की बात उचित है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम केवल एक नबी था और उनका दोबारा आना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के माध्यम से पूरा हो चुका है यह बात उनको समझ आ गई और इस्लाम में प्रवेश किया अहमदियत में शामिल हो गए। बातचीत के दौरान उन्होंने बाताया कि वह हमारा प्रोग्राम बहुत शौक से लम्बे समय से सुन रहे हैं और सोमवार और गुरुवार को रेडियो कार्यक्रम के निर्धारित समय से पहले वह विशेष रूप से सिर्फ अपने प्रोग्राम के लिए अपने काम से घर वापस आते हैं।

तलाश अगर हो तो फिर मार्ग दर्शन भी होता है। जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया। बोलीविया के मुबल्लिग़ ग़लिब साहिब लिखते हैं कि विलयम शायन जो युहवा वेनटस फिर्के के एक पादरी थे उनका संबंध लेबनान है और जन्म से ईसाई थे पिछले तीन साल से बोलीविया में रहते थे। विनीत ने इस ईसाई धर्म के पंथ के बारे में जानकारी पाने के लिए उन से अपनी बैठक तय की जब हम हमारी पहली बैठक थी, तो उन्होंने हमें अपने समुदाय के बारे में बताने के बजाय, मैंने इस्लाम अहमदियत के बारे में सवाल पूछना शुरू कर दिया। इसलिए इस बैठक में जमाअत की आस्थाएं वर्णन की गईं। विशेष रूप से हज़रत ईसा अलैहिस्सालम का विस्तार से ज़िक्र हुआ। कहते हैं मैंने उन्हें जुम्अ: में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया तो वह जुम्अ: के लिए नियमित रूप से आना शुरू हो गए और हर बार जुम्अ: के बाद उन से विस्तृत चर्चा हुई। विलियम साहिब को यह चिन्ता थी कि यदि वह जमाअत में प्रवेश करते हैं, तो उनके माता-पिता और चर्च उनका विरोध करेगा, और इस तरह उन्हें एक नई नौकरी तलाश करनी होगी, लेकिन दूसरी तरफ भी सच्चाई की तलाश को भी महत्त्व देते थे। आप अरबी समझ सकते थे, इस लिए उन्होंने जमाअत की वेबसाइट से अरबी किताबें पढ़ना शुरू कर दीं। इस अध्ययन के बाद कहने लगे कि वह बहुत देर से सच्चाई की तलाश में थे और अब उन्हें सच्चाई मिल गई है तो विरोध और बेरोजगारी की परवाह किए बिना अल्लाह तआला की कृपा से एक दिन जुम्अ: बाद बैअत कर के जमाअत में शामिल हो गए।

संदेश का लोगों पर प्रभाव होता है, चाहे वे बैअत करें या न करें। कामरान मुबश्शर साहिब ऑस्ट्रेलिया से इस बारे में लिखा कि हमने तब्लीग़ के लिए एक कार्यक्रम बनाया है। एक घर का दरवाजा खटखटाया तो अंदर से एक आदमी क्रोध से कांपता हुआ बाहर निकला। ऐसा लग रहा था कि शायद मुझ पर हमला कर देगा तो मुरब्बी साहिब कहते हैं उसी क्रोध की स्थिति में वह मुझे कहने लगा कि जब से तुम मुसलमान लोग हमारे देश मैं आए हो, हमारे देश की शांति नष्ट हो गई है, तुम लोग हमारे देश से बाहर निकल जाओ और हमारे साथ तुम लोग integrate नहीं हो सकते, न होना चाहते हो। जब उस की बात खत्म हो गई तो मैंने उससे कहा कि आपकी बात सच है, कुछ मुसलमान इस्लाम कट्टर हैं जो इस्लालम को ग़लत ढंग से प्रस्तुत कर रहे हैं लेकिन हमारी शिक्षाएं ये हैं कि मुहब्बत सब के लिए नफरत किसी से नहीं। जमाअत अहमदिया तो जिस देश में जाती है वहां हर तरह से integrate हो जाती, हमारे बच्चे भी खेलते हैं फुटबॉल क्लबों में भी खेलते हैं। मैं यहां नया हूं। पुस्तकालय का सदस्य बन गया हूं हालांकि, उनसे बहुत सारी बातें हुईं, इन बातों को सुन कर, जो व्यक्ति पहले क्रोधित था अब विनम्र था और पहले महसूस किया था कि वह हमला करेगा, अब बहुत खुश हुआ और कहा कि मैं आपके साथ एक तस्वीर बनाना चाहता हूं। आखिर पर कहतें हैं मैंने मिशन हाउस आने की दावत दी और उसने इसे बहुत ख़ुशी से स्वीकार कर लिया। लिखते हैं कि अल्लाह तआला का फज़ल है कि वह ख़ुद लोगों के दिलों को जमाअत के पैग़ाम के लिए नरम कर रहा है।

पिछले दिनों मैंने एक ख़ुत्बा में कहा था कि यहां जो असाइलम वाले हैं वे तब्लीग़ करें। जर्मनी के एस असाइलम सीकर जो असाइलम पर आए हुए थे , अपलाइ किया हुआ था वह अपनी एक घटना वर्णन करते हैं। कहते हैं मेरी एक जज के सामने सामने फाइल प्रोटोकोल थी। उस ने पूछा क्या तुम अपनी जमाअत के फलाइर बांटते हो? इस पर मैंने कहा जी मैं फलाइर बांटता हूं फिर जज ने पूछा किन कनि स्थानों पर फलायर बांटते हो? मैंने कुछ स्थानों के नाम लिए तो वह जज

**इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें**

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

कहने लगा अच्छा ठीक है अमुक स्थान पर मैंने भी फलायर लिया था। चलो जाओ तुम्हारा कैस पास करता हूं। तो इस प्रकार तब्लीग़ भी उस के पक्ष में फैसला करवाने का बन गई।

फिर दोबारा ऑस्ट्रेलिया के मुबल्लिग़ कामरान साहिब की घटना है। कहते हैं कि ख़ुद्दामुल अहमदिया के कुछ लड़कों को बड़ी हिचकिचाहट होती है। कुछ काम करने में शर्माते हैं कि शायद यहाँ के लोग हमें क्या कहेंगे? यहाँ तो अल्लाह तआला की कृपा है कि अब इतना परिचय जमाअत का हो गया है और इतना जानते हैं और इतना जानते हैं लोग कि यहां कि नौजवानों में जा झिझक थी समाप्त हो गई है लेकिन कुथ स्थानों पर है। कहते हैं ऑस्ट्रेलिया में ख़ुद्दामुल अहमदिया के साथ एक तब्लीग़ का कार्यक्रम रखा गया जिसमें ख़ुद्दाम से कहा गया कि वह जमाअत की शर्ट पहन कर बाहर जाएंगे और लोगों को तब्लीग़ करें। इस पर अक खादिम मेरे पासा आया और आकर कहने लगा कि मुझे जमाअत की टी शर्ट पहनते हुए शर्म आती है जिस पर लिखा हुआ है जमाअत अहमदिया। कहते हैं मैंने उस समझाया कि इसी कारण से लोग हमारे पास आएंगे। तुम पहनकर जाओ और देखो क्या होता है। अत: अल्लाह तआला के फज़ल से एसा ही हुआ जब ख़ुद्दामुल अहमदिया का ग्रुप बाहर निकला तो कहते हैं कि लोगों ने हमारी तस्वीरें लेना शुरू कर दीं इस अवसर पर हमारे इन्ट्रवियू लिए गए और तब्लीग़ के कई अवसर निकल आए। बाद में यही ख़ादिम था जो अपने दोस्तों को कहने लगा कि पहले मुझे जमाअत की टी शर्ट पहनते हुए शर्म महसूस हो रही थी परन्तु अब मुझे पता चला है कि सारी बरकतें जमाअत के नाम से ही हैं। तो अल्लाह तआला इस प्रकार तब्लीग़ के माध्यम से नौजवानों की तरबियत के सामान भी पैदा कर रहा है।

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इल्हाम में फरमाया था कि فَحَانَ اَنْ تُعَانَ وَتُعْرَفَ بَيْنَ النَّاسِ आप इस को विवरण देते हु ए फरमाते हैं कि

" एक ज़माना आएगा कि तेरी मदद की जाएगी और तू लोगों में पहचाना जाएगा। । यह तुअरफ बैयनन्नास का अर्थ है। यह बात अल्लाह तआला ने आप को 1883 ई को पहली इल्हाम की थी इस के बाद भी दो बार यह इल्हाम हुआ जब आप को कोई भी नहीं जानता था। आप फरमाते हैं क्या यह इंसान का काम और चालाकी ही सकती है? हरगिज़ नहीं। यह अल्लाह तआला का काम ब है कि पहले एक घटना की ख़बर देता है और वही गैब का ज्ञान रखता है वही ख़बर दे सकता है. आप ने फरमाया के प्रत्येक दिन यह निशान पूरा हो रहा है आप का परिचय दुनिया में बढ़ रहा है और लोग आप की बैअत में आ रहे हैं।

आप यह भी फरमाते हैं कि अल्लाह तआला एक ख़बर देता है कि तेरे लिए एक ज़माना एसा आएगा कि तू सारे संसार में प्रसिद्ध हो जाएगा।

(उद्धरित मलफूज़ात भाग 9 पृष्ठ 162-163 )

और इसी प्रकार से हो रहा है और आज हम देखते हैं कि अल्लाह तआला की कृपा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का नाम भी, जमाअत के नाम भी, इस्लाम का नाम भी दुनिया में फैल रहा है। एक दूरदराज़ क्षेत्र की आवाज़ आज दुनिया के कई देशों पहुंच चुकी है। 210 देशों में पहुंच गई है।

देशों के बारे में भी बात करूं। कुछ लोगों का मानना है कि शायद जमाअत अतिशयोक्ति करती है इतनी संख्या तो दुनिया में देशों की है ही नहीं जितनी हम लोग कहते हैं। क्योंकि यू एन की सदस्यता भी 190 या 195 देशों की है। बेशक यू एन के देशों की संख्या इतनी है परन्तु दुनिया में देशों की संख्या 220 देशों की है। पिछले दिनों बीबीसी ने किसी गेम के बारे में बात की है तो उन्होंने यह भी कहा था कि यह प्रोग्राम जो है यह मैच जो है दुनिया के 220 देशों में देखा जाएगा।

(http://www.bbc.com/sport/boxing/41033008)

इसलिए यू एन ओ के बारे में विचार पैदा कर के फिर यह ख़याल पैदा करना कि शायद जमाअत अतशियोक्ति करती है और उन्होंनें अधिक देश अपने पास से बना लिए हैं तो कुछ नौजवानों की जो यह जो धारणा है यह वह विचार है वह अपने दिमाग़ों से निकाल दें।

अल्लाह तआला हमें तौफीक दे कि हम यह संदेश पंहुचाएं और उस को पहंचाने वाले बन सकें जो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा से हमें दुनिया में पंहुचाने के लिए कहा है।

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 12 का शेष

थे। लगभग डेढ़ घंटे के सफर के बाद शाम 8 बज कर 30 मिनट पर मस्जिद फज़ल लंदन में पधारे जहां जमाअत के दोस्त मर्द तथा महिलाओं की एक बड़ी संख्या अपने प्यारे आक़ा को अहलव सहलन व मरहबा कहते हुए स्वागत किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया से अपना हाथ बढ़ा कर सबको अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बराकातुहो कहा और अपनी रहायश गाह पधारे। इस तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह अत्यंत मुबारक दौरा अल्लाह तआला के अपार फज़लों और बरकतों को समेटे हुए महान सफल उपलब्धियों और कार्यों के साथ नेकी और भलाई पर समाप्त हुआ। अलहमदु लिल्लाह अला ज़ालेक

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ में जिन भाग्यशाली लोगों को इस सफर पर जाने की सआदत नसीब हुई उनके नाम रिकॉर्ड के लिए दर्ज किए जाते हैं: (1) हज़रत सैयदा अमतुस्सबूह साहिबा (हरम सैयदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामसि अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़) (2) आदरणीय मुनीर अहमद जावेद साहिब (निजी सैक्रेटरी) (3) आदरणीय आबिद वहीद खान (इन्चार्ज प्रेस एंड मीडिया कार्यालय लंदन) (4) आदरणीय मेजर महमूद अहमद साहिब (उप अधिकारी सुरक्षा विशेष लंदन) (5) आदरणीय नासिर अहमद सईद साहिब (रक्षा विभाग) (6) आदरणीय सखावत अली बाजवा साहिब (रक्षा विभाग) (7) आदरणीय मोहसिन अवान साहिब (रक्षा विभाग) (8) आदरणीय ख्वाजा कुद्दूस साहिब (रक्षा विभाग) (9) आदरणीय महमूद अहमद खान साहिब (रक्षा विभाग) (10) आदरणीय बशीर अहमद साहिब (कार्यकर्ता कार्यालय निजी सैक्रेटरी) (11) विनम्र अब्दुल माजिद ताहिर (अतिरिक्त वकीलुत्तबशीर लंदन)

* आदरणीय हमाद मुबीन साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला (कार्यालय निजी सैक्रेटरी) और आदरणीय अतहर अहमद साहिब कार्यकर्ता कार्यालय निजी सैक्रेटरीको भी काफिले में शामिल होने की सआदत नसीब हुई।

* जामिया कनाडा के वर्ष 2016 के स्नातकों में से निम्नलिखित मुरब्बियान जो अपनी प्रशिक्षण के सिलसिले में ब्रिटेन में थे उन्हें भी हुज़ूर अनवर के साथ जर्मनी के इस सफर में काफिले में शामिल होने की सआदत प्राप्त हुई। आदरणीय आतिफ अहमद ज़ाहिद साहिब आदरणीय सरजील अहमद साहिब, आदरणीय साजिद इकबाल साहिब, आदरणीय साक़िब जफर साहिब, आदरणीय फ़रहाद गफ्फार साहिब, आदरणीय अब्दुल बासित ख्वाजा साहिब, आदरणीय रिजवान सैयद साहिब।

* इस के अलावा निम्नलिखित दोस्तों को गाड़ियां ड्राइव करने की सआदत नसीब हुई: आदरणीय नदीम अहमद अमीनी साहिब आदरणीय नासिर अहमद अमीनी साहिब, आदरणीय मुहम्मद अहमद साहिब, आदरणीय इमरान ज़फर साहिब, आदरणीय रहमान साहिब।

* आदरणीया सज्जाद अहमद मलिक साहिब जर्मनी में रहने के दौरान कारवां में शामिल हुए।

*इस के अलावा एम टी ए इंटरनेशनल (यू के) के निम्नलिखित सदस्यों ने इस दौरे के ख़ुत्बाते जुम्अ:, मस्जिदों के उद्घाटन व शिलान्यास और प्रतिनिधियों के साथ मीटिंगों और मुलाकातों और हुज़ूर अनवर के साक्षात्कार और अन्य कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग और कुछ कार्यक्रमों की live ट्रांसमिशन के लिए इस सफर में शामिल की सआदत पाई: आदरणीय मुनीर अहमद ओदा साहिब आदरणीय सफीर अहमद क़मर साहिब, आदरणीय अदनान ज़ाहिद साहिब, आदरणीय अबरार बैग साहिब।

*एम. टी. ए टीम के अलावा आदरणीय उमेर अलीम साहिब इन्चार्ज विभाग मख़ज़ने तस्वीर भी इसमें शामिल हुए।

*जर्मनी से डॉक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब इस सफर के दौरान बतौर डॉक्टर ड्यूटी पर काफिले के साथ रहे।

* इन दोस्तों के अलावा जर्मनी से आदरणीय अब्दुल्ला सुपराय साहिब को भी इस सफर में काफिले के साथ रहने की सआदत नसीब हुई। अल्लाह तआला इन सब बातों के लिए बरकत वाला बनाए ।

**(समाप्त.....)**

☆ ☆ ☆

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -17 अन्तिम भाग)

☆ मैं सदरों को भी और कार्यकारिणी के सदस्यों को भी यह कहना चाहता हूँ कि अपने आप को धर्म का सेवक समझें और धर्म का सेवक समझ कर काम किया करें। उहदेदार समझ कर काम न किया करें।

☆ हम तो धार्मिक जमाअत हैं कोई संसारिक जमाअत नहीं हैं। इस लिए अगर धार्मिक जमाअत हैं तो हमें वही काम करना होगा जो अल्लाह और उस के रसूल का आदेश है

☆ अल्लाह तआला ने जमाअत को तो तरक्की देनी है और ज़रूर होनी है और इन्शा अल्लाह जमाअत बढ़ेगी परन्तु यदि आप लोग अपना सुधार नहीं करेंगे तो आप की जगह दूसरे लोग आ जाएगें।

## हुज़ूर अनवर की बैलजियम के रास्ते से ख़ैरियत से लंदन वापसी और शानदार स्वागत।

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

**23 अप्रैल 2017 (दिन रविवार) (शेष....)**

**सामान्य निर्देश**

* इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमायाः मैं सदरों को भी और कार्यकारिणी के सदस्यों को भी यह कहना चाहता हूँ कि अपने आप को धर्म का सेवक समझें और धर्म का सेवक समझ कर काम किया करें। उहदेदार समझ कर काम न किया करें। उहदेदार या अफसरी की जो धारणा पैदा होती है उस से जमाअत के लोगों के शिकायतें पैदा होती हैं। आप प्रत्येक के सेवक हैं आपको प्रत्येक तक पहुंचना है और उनकी समस्याओं का समाधान करना होगा। इस प्रणाली को निचले स्तर तक भी बनाया गया है जिससे कि हर कोई स्थानीय स्तर के संपर्क में हो और फिर राष्ट्रीय स्तर पर, फिर केंद्र से और फिर समय के ख़लीफा सेहो । जो प्रशासनिक मामले हैं ,प्रशिक्षण के मामले हैं और जमाअत के कार्यक्रम हैं, उनके लिए आपको लोगों तक पहुंचने की जरूरत है। यह न इंतज़ार किया करें कि लोग अप तक पहुंचें। और अपने सैक्रेटरी माल को भा प्रत्येक स्थान पर क्रियान्वित करें ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमयाः कभी-कभी यह भी शिकायत आती है कि मुरब्बियों को सम्मान और प्रतिष्ठा आप लोगों को देनी चाहिए वे आप लोग नहीं देते। मुरब्बी चाहे वे यहां कि शिक्षित लड़के हैं और युवा हैं और छोटे हैं या बच्चे हैं, वे अब बहरहाल मुरब्बी हैं। यदि आपकी जमाअत के लिए नियुक्त किए गए हैं। उन का सम्मान करना, इज़्ज़त करना उन की ज़रूरतों का ध्यान रखना अगर वे आप की जमाअत में नियुक्त किए गए हैं ये आप लोगों का काम है अगर कुछ एसी बातें हैं जो नहीं हो सकतीं तो आप का काम है कि अमीर जमाअत को लिखें या अमीर जमाअत के माध्यम से केन्द्र को लिखें। हम ने जिस प्रकार से भी या जो भी समझाना होगा वे कर लेंगे। आप या किसी उहदेदार का यह काम नहीं कि किसी मुरब्बी के साथ इस प्रकार बात करें जो उस की इज़्ज़त तथा सम्मान के ख़िलाफ हो। प्रत्येक अनिवार्य करे कि उस सा सावधानी हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमायाः इसी तरह राष्ट्रीय स्तर पर, जब विभिन्न क्षेत्रों की योजना बनती हैं, तो उस की स्वीकृति कार्यकारणी में लिया करें। अमला के फैसला के बाद ही जमाअतों में लागू करवाएं।कई बार नए मशवरे आ जाते हैं और इस के बाद फिर इस का बाद नियमित रूप से पीछा भी होना चाहिए। व्यक्तिगत रूप से काम करने की आदत को समाप्त करें। स्थानीय जमाअतों में भी आदमियों को स्थानीय उहदेदारों को भी यह इहसास होना चाहिए कि नेश्नल आमला हमारी सेवा के लिए बनाई गई है न कि अफसरी करने के लिए बनाई गई है।

* मैंने इसे पहले ही स्पष्ट कर दिया है, फिर स्पष्ट कर देता हूं कि नेशनल आमला के सदस्य, सदर और सदरों की आमला के सदस्यों को भी याद रखना चाहिए कि आप प्रमुख नहीं हैं, बल्कि आप लोग सेवक हैं। इस भावना के साथ काम करना हैं तो करें,अगर नहीं करना है तो क्षमा मांग लें। अपने अंदर विनम्रता पैदा करें। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से फरमाया है कि तेरी विनम्र राहें उसे पसन्द आईं। विनम्रता ही वास्तविक चीज़ है। जो आप को वास्तविक स्थान देती है और आप सा सम्मान स्थापित करती है आप की वास्तविक इज़्ज़त उसी समय स्थापित हो सकती है जब विनम्रता पैदा होगी। अंहकार और गर्व से सम्मान स्थापित नहीं हुआ करता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है

बदतर बनो हर एक से अपने ख़याल में
शायद इसी से दाख़िल हो दारुल विसाल में

हम तो धार्मिक जमाअत हैं कोई संसारिक जमाअत नहीं हैं। इस लिए अगर धार्मिक जमाअत हैं तो हमें वही काम करना होगा जो अल्लाह और उस के रसूल का आदेश है और इस ज़माना में जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हम से आशाए हैं। मैं उहदेदारों को ख़ुत्बा जुम्अः में भी समय-समय ध्यान दिलाता रहता हूं। यह न समझें कि वह बातें अमुक उहदेदार के लिए हैं। अगर प्रत्येक सही समझे कि यह बातें मेरे लिए हैं तो ख़ुद ही साथ साथ अपने सुधार की तरफ ध्यान पैदा होता रहेगा। आप यह करके देख लें इस से जमाअत के लोगों का आप से सम्बन्ध भी बढ़ेगा। बहुत सारे नौजवान यह कहते हैं कि विशेष रूप से बड़ी उमर के उहदेदार या कुछ दूसरे भी उन के ऐसे व्यवहार हैं कि हम पीछे हट गए हैं। समस्याओं को प्यार से हल करना आप लोगों का काम है। समस्याओं को रौब से हल करना हमारा काम नहीं है। जब अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आदेश दिया कि नर्मी और प्यार से बात करो और उन से परामर्श लो तो फिर मैं और आप कौन होते हैं जो रौब डालें? सारे काम करने हैं परन्तु प्यार और मुहब्बत से। हां अगर आप देखते हैं कि जमाअत के हित में कमी आ रही है या मुकसान होने की फिक्र हा तो फिर मुझे रिपोर्ट करें। इस के बाद या मर्कज़ या समय के ख़लीफा का काम है कि उस मस्ला को जिस प्रकार भी डील करना है या ठीक करनी है कर लेगा। आप लोगों का फर्ज़ भी समाप्त हो जाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमायाः नेश्नल आमला वाले भी यह ध्यान रखें कि कई बार जब मैं मामलों की तहकीक करवाता हूं तो आमला के लोग ये बातें करते हैं कि मैं लोगों कि बातों में आ जाता हूं और सुनता हूं। अगर मैं लोगों की बातों में आ भी जाता हूं तो यह गुनाह नहीं बल्कि जायज़ है पहली बात तो यह है कि जब एक ही बात विभिन्न लोगों से पता चल रही है तो इस में बहरहाल वास्तविकता होती है। यह नहीं कि आप लोग सहीह हों और सारी दुनिया गलत हो। अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी फरमाया हुआ है। सूरह तौबः में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में भी कहते हैं कि" यह कान रखता है" अर्थात लोगों की बातें सुनता है। तो अगर मैं लोगों की बातें सुनता हूं तो यह अल्लाह तआला का फज़ल है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करता हूं। अल्लाह तआला ने भी वहां पर यही फरमाया है कि तुम लोगों को कह दो कि अगर तुम कान रखते हो किसी को नुकसान पहुंचाने के लिए या किसी व्यक्तिगत दुश्मनी या शत्रुता के कारण से नहीं बल्कि जमाअत की बेहतरी के लिए ही करता हूं। और न ही कोई मुझे किसी से कोई व्यक्तिगत शत्रुता है। अगर मैं कुछ चाहता

हूं तो केवल जमाअत और अपने लोगों का सुधार चाहता हूं। सिर्फ यही नहीं बल्कि जब भी मैं यह कहता हूं तो ख़ुद भी बहुत ज्यादा इस्तिग़फार कर रहा होता हों। इस के लिए अगर कोई मेरे बारे में यह कहता है कि मैं कान रखता तो यह तो मेरे लिए यह बहुत अच्छा है मैं सुन्नत पर काम कर रहा हूं और अल्लाह तआला इस बात को तुच्छ जानता है। लेकिन ख़तरनाक बात आप लोगों के लिए है या ऐसे विचारों वाले लोगों के लिए है क्योंकि यह कपटियों के बारे में बात की जाती है। कपटी ऐसे काम करते हैं यदि आपको सही बैअत का हक अदा करना है, तो अपने मन से ऐसे विचारों को हटा दें मुझे यहां किसी का नाम लेने की कोई ज़रूरत नहीं और न ही मुझे नाम लेना है, लेकिन जिस ने यह बात कही है कि उसे ख़ुद सोचना चाहिए। अगर लोग उहदेदारों के आसपास के चीजों के बारे में लिखते हैं, उनमें से कुछ गलत लिखते हैं, मैं उन के बारे में तहकीक करवाता हूं यदि कोई केंद्रीय अधिकारी के बारे में कोई शिकायत है और मैं अनुसंधान करता हूं, तो इस बात में पड़ जाना कि किस ने शिकायत की है क्यों की है यह आप लोगों का काम नहीं। आप लोगों का काम सुधार करना है वरना आप उन लोगों में शामिल हो जाऐंगे जिन के बारे में यह आयत है मेरे लिए तो यह सम्मान है कि मैं अल्लाह तआला के उस आदेश पर चल रहा हूं जो अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दिया और इस आदेश पर चलना एक सुन्नत है लेकिन आप लोगों के एक ख़तरनाक बात है क्योंकि यहां पर मुनाफिकीन का उल्लेख है। इससे बचने की कोशिश करें अन्यथा नुकसान उठाएंगे। अल्लाह तआला ने जमाअत को तो तरक्की देनी है और ज़रूर होनी है और इन्शा अल्लाह जमाअत बढ़ेगी परन्तु यदि आप लोग अपना सुधार नहीं करेंगे तो आप की जगह दूसरे लोग आ जाएगें। इसलिए इन बातों को छोड़ कि किस ने क्या लिखा और क्यों लिखा। यदि कोई ग़लती है, तो इसे सही किया जाना चाहिए। यदि यह अनुचित नहीं है, तो उसे समझाया जाना चाहिए। मुझे तो दस स्थानों से कोई बात पहुंचती है तो फिर आप लोगों से पूछता हूं। एक दो शिकायत हो तो मैं पूछता भी नहीं हूं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "फिर इस सीमा तक निकल जाना कि लोगों को यह इहसास पैदा हो जाए कि उहदेदार तो ये कहते हैं कि समय का ख़लीफा लोगों की बातों में आ जाता है मैं लोगों की बातों में आता हूं या नहीं आता परन्तु आप लोगों का यह काम है कि अगर आप ने बैअत का हक अदा करना है तो पूर्ण इताअत का नमूना दिखाएं।

**सवालों के जवाब**

बाद में वहां पर मौजूद कुछ सदरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से कुछ सवाल करने की अनुमति मांगी, जिस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए अनुमति प्रदान फरमाई।

सबसे पहले, वीज़ बादन के सदर जमाअत ने कहा था कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने 2014 ई में हमारी मस्जिद की नींव रखी। वहां साढ़े सात लाख यूरो में प्लॉट ख़रीदा गया जिसमें से छह लाख स्थानीय लोगों ने अदा किया था। इसी प्रकार तामीर के हवाले से दो मिलियन के वादे थे वे भी अदा हो चुके हैं लंबी प्रतीक्षा के बाद कल ठेकेदार की संपत्ति विभाग के साथ मीटिंग है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी जयादाद को फरमाया। यदि कल contractor आ रहा है और बाकी सारी बातचीत हो चुकी है तो ठीक है उसे सारा जायज़ा लेकर फाइनल कर लें। इसी तरह जिन स्थानों पर अनुबंध आदि हो चुके हैं और प्रोजेक्ट चल रहे हैं वह तो इसी तरह जारी रहेंगे लेकिन बाकी वह स्थान जहां अनुबंध आदि अब करने हैं और कोई साइन आदि नहीं हुए और ऐडवानस स्टेज तक नहीं नहीं चले गए वे सारी योजना मुझे दिखानी हैं। लेकिन जो इस समय निर्माणाधीन हैं, या उनकी मस्जिद का जो भी अनुबंध आदि हो उसकी सारी जानकारी भी मुझे देनी हैं।

*इस के बाद एक दोस्त ने अर्ज़ किया कि मुझे रबवा में निर्माण का काम करने का मौका मिला। अगर मुझे उनके साथ सेवा का मौका मिल जाए और चाहें तो दीन तीन से पांच प्रतिशत low cost करवाने में मदद कर सकता है। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया आप उन्हें सलाह दे। उसके बाद उनका काम है कि वह आप को जोड़ना चाहते हैं या केवल advisor के रूप में ही आप से सलाह लेना चाहते हैं। आपके दिमाग़ में जो भी योजना है वह उन्हें दें। वहाँ खड़े होकर मस्जिद केवल फूंक मारने से तो तीन चार पर्सेंट कम नहीं होगा। इसके लिए आपके पास जो भी योजना है वह उन्हें दें। यदि लागू हुई तो देख लेंगे और अगर अधिक information की ज़रूरत हुई तो वह भी ले लेंगे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी संपत्ति को कहा: आप लोग भी ऐसे लोग तलाश करें जिनके पास कोई technical skill है और अगर कोई सलाह दे तो ले लिया करें। सलाह की आदत डालें, सलाह लेने की आदत बहुत कम है।

*इस के बाद Steinberg के जमाअत सदर महोदय ने कहा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूर्व जर्मनी में Erfurt में निर्माण होने वाली मस्जिद के विषय में जो इरशाद फ़रमाया इसके लिए हमने बहुत मेहनत की है और पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हुई है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मुझे इससे मकसद नहीं कि कितनी प्रसिद्ध हुई है। वहाँ चार आदमी रहते हैं। बाकी बड़ी जमाअतों को छोड़ कर वहाँ अब मस्जिद बनाने की ज़रूरत नहीं है। जब वहाँ बनानी होगी, आप को स्वीकृति मिल जाएगी।

* उसके बाद Ausberg के जमाअत सदर महोदय ने कहा कि हमारी जमाअत में मस्जिद का उद्घाटन हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमा दिया है। अब वहाँ मुबल्लिग़ भिजवाने का आवेदन करना है। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप को मुबल्लिग़ भी मिल जाएगा। तथा हुज़ूर अनवर ने फरमाया कि आप अपनी जमाअत से भी जामिया अहमदिया में छात्र भेजें। पहले तो इन जमाअत को मुबल्लिग़ों मिलेंगे जिन्होंने अपनी जमाअत से छात्र तैय्यार कर के जामिया में भिजवाए हैं।

* एक जमाअत के सदर साहिब ने अर्ज़ किया कि जिन स्थानों पर मस्जिदों का निर्माण हो रहे हैं वहाँ साथ ही मुरब्बी हाउस भी निर्माण किए जाएं। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: ठीक है यदि इतना बजट है तो मुरब्बी हाउस भी बन सकता है, अन्यथा किराए पर कोई घर ले लें। कई स्थानों पर एक कमरा बन जाता वहाँ छोटे परिवार वाले मुबल्लिग़ को जो केवल पति पत्नी हों उनका भेजा जा सकता है।

*एक जमाअत से सदर साहिब ने सवाल किया कि हमारे कार्यकारिणी के कुछ ख़ुद्दाम सदस्यों बड़ा अच्छा काम कर रहें हैं लेकिन उनके पास उप संगठनों की भी जिम्मेदारी आ जाती है। इस कारण सदर जमाअत को कभी कभी मुश्किल पड़ जाती है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: पहले तो जमाअत का काम ही होता है। जमाअत का काम पहली परीफरनस (preference) है उसके बाद जो अधिक समय है वह दरअसल ख़ुद्दाम का काम। आप सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया को लिखकर दे सकते हैं कि अगर कोई विशेष मजबूरी नहीं है तो उसकी जगह किसी और को यह ज़िम्मेदारी दे दें। आप सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया को लिखकर दे सकते हैं कि उन लोगों से हम ने काम लेना है और यह हमारे काम में पहले से ही व्यस्त हैं या उन के पास अमुक जमाअत का पद है इसलिए उनसे दूसरे काम न लिए जाएं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: काम करने वाले लोग तो थोड़े ही होते हैं और काम अधिक होता है। इसलिए इस बात को हम खुद ही adjust लिए हमने भी तीन स्थानों पर काम किया है। जमाअत के काम के अलावा ख़ुद्दामुल अहमदिया और दूसरे संगठनों का काम भी करते थे। यह तो हिम्मत की बात है। लेकिन यहाँ के बाद अपने काम भी करने होते हैं, कई बार जॉब से लेट आते हैं, फिर थक भी जाते हैं और कई बार नहीं कर सकते। इसलिए कोई विशेष ऐसा आदमी हो जिस से कोई काम लेना है उसके विषय में ख़ुद्दामुल अहमदिया को लिख सकते हैं लेकिन आम तौर पर तो बहरहाल किसी न किसी तरह मिलजुल कर adjust करना पड़ता है।

* उसके बाद जमाअत Neubid के सदर साहिब ने अर्ज़ किया कि हमारे पास अल्लाह तआला की कृपा से मस्जिद मौजूद है। हम मुरब्बी हाऊस के लिए निवेदन किया हुआ है और हम ने वादा किया है कि मुरब्बी हाऊस के लिए जितनी भी जरूरत है वह हम अदा करेंगे। मस्जिद के साथ मुरब्बी हाउस बनाने के लिए जगह भी मौजूद है। इसी तरह अल्लाह तआला की कृपा से हमारी जमाअत से दो बच्चे जामिया अहमदिया भी गए हैं। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि आप आपने ख़ुद ही देना है और आपके पास क्षमता है तो बना लें। आपको किस ने रोका है। आपके पास के जगह भी है, पैसे भी हैं सैक्रेटरी संपत्ति को लिख दें कि हम मुरब्बी हाऊस बनाना चाहते हैं और बना लें।

*एक जमाअत के अध्यक्ष ने अर्ज़ किया कि मस्जिदें बनने के बाद मस्जिदों में अधिकतर कार्यक्रम हो रहे हैं और जर्मन भी शामिल होते हैं। लेकिन हमारे पास

भोज के लिए कोई जगह नहीं है कि सभ्य तरीके से खाना खिलाया जा सके। मैंने सुझाव दिया था कि कोई लकड़ी का शेड आदि बनाया जाए लेकिन मुझे कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: स्थानीय जमाअत सभ्य तरीके से ही खाना खिलाती होगी। अभी जो वस्तुएं उपलब्ध हैं उसी से ही लाभ उठाएं। अगर हमारे पास संसाधन होते, तो हम सब चीजों को एक बार में ही कर लेते। लेकिन जितनी राशि होती है उसके अनुसार सब को पैसे मिलते हैं। हर हफ्ते तो ग़ैरों के साथ प्रोग्राम नहीं होते और जब भी होते हैंतो टेंट आदि लगवा लिया करें या कोई और मजबूरी हो और मेहमान आ जाएं तो मस्जिद में ही नीचे प्लास्टिक बिछाकर वहां प्रबंध कर सकते हैं। मैंने यू.के में इस बात से रोका था लेकिन साल में अगर एक दो बार ऐसी मजबूरी आ जाती है तो मस्जिद में प्लास्टिक बिछाकर वहाँ चाय आदि पिला सकते हैं। लेकिन बाद में अच्छी तरह से सफाई का प्रबन्ध करें। खानों में मसालों के खुशबुएं उठती हैं, इसलिए उन्हें मस्जिद में नहीं लाया जाना चाहिए। अगर चाय या snack आदि ला रहे हैं तो इस हद तक ठीक हे। मसले तो हैं लेकिन हमारे पास जो संसाधन हैं उनके अंदर रहते हुए ही इन समस्याओं को हल करना है। साल में एक दो जो बड़े कार्यक्रम होते हैं उनमें तम्बू लगवा लिया करें और बाकी चाय पानी की सीमा तक मस्जिद में ठीक है। जैसा कि मैंने कहा है कि भोजन में मसालों की खुशबू होती है और वे मस्जिद में रच बस जाती है और बड़ी देर तक रहती है। इसलिए खाना नहीं होना चाहिए।

* एक सदर साहिब जमाअत ने अर्ज़ किया कि क्षेत्रों में जो मीटिंगें या इजलास आदि होते हैं उनमें विशेष भोजन प्रबन्ध काफी रिवाज बन रहा है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: यदि अपने पैसों से कोई विशेष भोजन खिला रहे हैं तो खिला दें। लेकिन कुछ दिन हैं जैसे मसीह मौऊद दिवस, सीरत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम या ऐसे दिन होते हैं जब जमाअत का जलसा और कार्यक्रम होते हैं उनमें जमाअत द्वारा सरल खाना बना दिया करें। इतना स्वादिष्ट खानों की क्या आवश्कयता है? सालन रोटी कर दें या चावल कर दें। या केवल बिरयानी और दही हो जाए। अधिक खानों की आवश्यकता नहीं है हां, अगर स्थानीय प्रशासन ख़ुद खर्च कर रही है, तो यह ठीक है लेकिन केन्द्रीय बजट की आवश्यकता नहीं है। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मुबल्लिग़ इन्चार्ज साहिब को मुखातिब होते हुए कहा कि मुबल्लिग़ों की मासिक मीटिंग करते हैं तो स्थान बदल बदल कर किया करें। मीटिंग के साथ दूसरे तरबियती प्रोग्राम भी बनाएं। दूर दूर की बड़ी जमाअत में जाया करें ताकि जमाअतों को भी पता लगे कि मुरब्बियान काम कर रहे हैं और मुरब्बियों को भी पता हो कि कहां कहां जमाअत हैं और कैसे उनके काम हो रहे हैं। इस से आपस में एक दूसरे के साथ संबंध और सम्पर्क भी स्थापित होता ।

शाम 8:00 बजे, यह मीटिंग समाप्त हो गई।

**नमाज़े जनाज़ा हाज़िर व ग़ायब**

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कुछ मरहूमीन नमाज़े जनाज़ा हाज़िर पढ़ाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद के हॉल में तशरीफ लाए और कुछ निकाहों की घोषणा फरमाई।

**निकाहों के एलान**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद, तऊज़ और मसनून ख़ुत्बा निकाह के बाद फ़रमाया 'इस समय में कुछ निकाहों की घोषणा करूंगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्न 15 निकाहों की घोषणा की: (1) प्रिया अयमान इमतयाज (वाकफह नौ) सुपत्री आदरणीय इम्तियाज़ अहमद साहिब (कैसल, जर्मनी) का निकाह प्रिय हमद शाहीन (वाक्फे नौ) इब्न आदरणीय मुबश्शिर अहमद शाहीन साहिब ( हमबरग, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ। (2) प्रिया नताशा राना (वाकफह नौ) सुपत्री आदरणीय इमरान राणा साहिब (हनवोर, जर्मनी) का निकाह प्रिय नादी अहमद (वाक्फे नौ) इब्ने आदरणीय हफीज़ अहमद साहिब (आलन डोरफ, जर्मनी) के साथ तय पाया। (3) प्रिया ख़ूला आसिम सुपत्री आदरणीय इरफान आसिम साहिब (लंदन) का निकाह प्रिय सरफराज़ अहमद शेख (वाक्फे नौ) इब्ने आदरणीय इफ्तिखार अहमद शेख साहिब (एप्पल हाईम, जर्मनी) के साथ तय हुआ । (4) प्रिया नाइलह अरशद सुपत्री आदरणीय अरशद अली खान (राइन हाईम, जर्मनी) का निकाह प्रिय खुर्रम शाहिद पुत्र आदरणीय एजाज़ अहमद साहिद साहिब (वाइब लनगन, जर्मनी) के साथ बारह हज़ार यूरो हक मेहर होना करार पाया है। (5) प्रिया शकीला ज़िया मंज़ूर (वाकफह नौ) सुपत्री आदरणीय शब्बीर अहमद ज़िया साहिब (नीडा, जर्मनी) का निकाह प्रिय मबरूर अहमद मंज़ूर (वाक्फे नौ) इब्ने आदरणीय मंज़ूर अहमद साहिब (नीडा, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ। (6) प्रिया ताहिरा हमीदा (वाकफह नौ) सुपत्री आदरणीय हमीदुल्लाह ज़फर साहिब (राष्ट्रीय सैक्रेटरी तहरीक जदीद जर्मनी) का निकाह प्रिय समीर अहमद पुत्र आदरणीय नसीम अहमद साहिब (फ्रैंकफर्ट, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ। (7) प्रिया लबीहा रहमान (वाकफह नौ) सुपत्री आदरणीय हमोद रहमान अहमद साहिब स्वर्गीय (कार्बन, जर्मनी) का निकाह प्रिय फहद महमूद चीमा (वाक्फे नौ) इब्ने आदरणीय नासिर महमूद चीमा साहिब (हमबरग, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ। (8) प्रिया Esra Tas सुपत्री आदरणीय Yusuf Tas साहिब (फ्रैंकफर्ट, जर्मनी) का निकाह प्रिय अबरार शाह साहिब (स्नातक जामिया अहमदिया यू.के) इब्न आदरणीय सैयद मुहम्मद इकबाल शाह साहिब के साथ संपन्न हुआ। (9) प्रिया समीरा माजिद मलिक सुपत्री आदरणीय देश अब्दुल माजिद साहिब मरहूम ( कराची, पाकिस्तान) का निकाह प्रिय मलिक सईद दीन साहिब (मुरब्बी सिलसिला रबवा) इब्ने आदरणीय मलिक सबा दीन साहिब (रबवा) के साथ संपन्न हुआ। (10) प्रिया फ़ाइज़ह अहमद सुपत्री आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब (फरीद दरेश डोरफ, जर्मनी) का निकाह प्रिय मुसतनसर अहमद (मुरब्बी सिलसिला जर्मनी) इब्न आदरणीय बिशारत अहमद साहिब (हमबरग, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ। (11) प्रिया मह जबीन सुपत्री आदरणीय मकबूल अहमद साहिब (कलास वाला ज़िला सियालकोट) का निकाह प्रिय हाफिज मुबशर अहमद, मुरब्बी सिलसिला पुत्र आदरणीय मुहम्मद यूनुस साहिब (नसीर आबाद, रबवा) के साथ संपन्न हुआ। (12) प्रिया सिदरतुल सलीम सुपत्री आदरणीय मुहम्मद अफज़ल सलीम साहिब (सदर जमाअत नीडा) का निकाह प्रिय मसरूर अहमद (वाक्फे नौ) इब्ने आदरणीय मुबश्शिर अहमद साहिब (फरीद रश, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ। (13) प्रिया बासमा वसीम भट्टी सुपत्री आदरणीय वसीम अहमद भट्टी साहिब (सदर जमाअत गरोन बर्ग, जर्मनी) का निकाह प्रिय मुहम्मद फातेह आसिफ (वाक्फे नौ) इब्ने आदरणीय मुहम्मद अहमद साहिब (फ्रैंकफर्ट, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ। (14) प्रिया साजिदा उम्र सुपत्री आदरणीय मुहम्मद इरफान शाकिर साहिब (फेंकने शटड, जर्मनी) का निकाह प्रिय बासल अहमद मुहम्मद (वाक्फे नौ) इब्ने आदरणीय मुहम्मद अकरम अंजुम साहिब (न्यू नेटिंगन, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ। (15) प्रिया अलचम चेचन (Ozlem Cecen) सुपत्री आदरणीय Selahattin Cecen साहिब (हमबरग, जर्मनी) का निकाह प्रिय हनान अहमद (वाक्फे नौ) इब्ने आदरणीय नसीर अहमद साहिब ( सैक्रेटरी वक्फ नौ हमबरग, जर्मनी) के साथ संपन्न हुआ।

निकाहों की घोषणा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाईं। दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

**24 अप्रैल 2017 (सोमवार)**

**फ्रैंकफर्ट (जर्मनी) से प्रस्थान**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर पनद्रह मिनट पर बैयतुस्सुबूह में फज्र की नमाज़ पढ़ाई। दुआ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। आज कार्यक्रम के अनुसार फ्रैंकफर्ट (जर्मनी) से लंदन (यू.के) के लिए प्रस्थान था। फ्रैंकफर्ट क्षेत्र और आसपास की जमाअत के दोस्त, जमाअत के मर्द महिलाएं, बच्चे, बूढ़े बड़ी संख्या में अपने प्यारे आका को अलविदा कहने के लिए सुबह से ही बैयतुस्सुबूह परिसर में जमा होने शुरू हो गए थे।

सुबह 9 बज कर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। छोटे बच्चे और बच्चियों के समूह के रूप में विदाई नज़में पढ़ रहे थे। जमाअत के दोस्त दो पंक्ति में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ करूणा से जमाअत के दोस्तों के बीच लगभग दस मिनट तक रौनक अफरोज़ रहे हर छोटे बड़े ने प्यारे आक़ा का दर्शन किया। एक पिता-पुत्र हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की वीडियो बना रहे थे। हुज़ूर अनवर ने उन्हें अपने पास के बुलाया और कैमरे के विषय में कुछ बातें पूछीं। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इन दोनों पिता-पुत्र की वीडियो बनाई।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/2017-2019- Vol. 2 Thursday 9 Novmber 2017 Issue No. 45

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

ज़हे किस्मत ज़हे नसीब!

दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और सभी को अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बराकातुहो कहा। इस के बाद कारवां सफर पर रवाना हुआ। दोनों तरफ खड़े मित्रों मर्दो महिलाओं ने लगातार अपने हाथ बढ़ा कर अपने प्यारे और महबूब आक़ा को अलविदा कह रहे थे। बहुतों की आंखों से आंसू रहे थे। जुदाई के यह क्षण उनके शिाक लिए बहुत कठिन थे।

फ्रैंकफर्ट (जर्मनी) से लंदन जाते हुए रास्ते में बेल्जियम के मिशन हाउस बैयतुस्सलाम (ब्रसेल्स) में रुकने का कार्यक्रम था। फ्रैंकफर्ट से ब्रसेल्स तक की दूरी लगभग चार सौ किलोमीटर है।

ब्रसेल्स में थोड़ी देर ठहरना और मिशन हाउस का निरीक्षण

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ एक बज कर पच्चीस मिनट पर अहमदिया मिशन हाउस बैयतुस्सालम (ब्रसेल्स) तशरीफ़ लाए। स्थानीय जमाअत के मित्रों मर्दो महिलाओं और राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्यों ने अपने प्यारे आक़ा का स्वागत किया। आदरणीय डॉक्टर इदरीस अहमद साहिब अमीर जमाअत बेल्जियम और आदरणीय हाफिज एहसान सिकंदर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज बेल्जियम ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से शरफ़ मुलाकत प्राप्त किया।

इसके बाद दो बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में तशरीफ़ लाकर नमाज़े ज़ोहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर ने सभी जमाअत के दोस्तों से हाथ मिलाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए महिलाओं के हॉल में भी पधारे जहां महिलाओं ने ज़ियारत प्राप्त किया।

*इस के बाद हुज़ूर अनवर ने मिशन के बाहरी आवरण का निरीक्षण किया जहां विभिन्न प्रकार के पेड़ लगाए गए हैं। हुज़ूर अनवर ने उन पेड़ों प्रकार के संदर्भ खोज फरमाया। इसी प्रकार हुज़ूर अनवरीदह अल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ ने हिदायत फ़रमाई कि पेड़ ऐसे लगाएं कि पार्किंग की जगह भी हो और खेल आदि के लिए भी एक हिस्सा मौजूद रहे।

ब्रसेल्स मिशन हाउस की दूसरी मंजिल में नया निर्माण हुआ है और कुछ कार्यालय बनाए गए हैं। हुज़ूर अनवर ने इन कार्यालयों का निरीक्षण किया। यहां विभाग जनरल सैक्रेटरी, विभाग माल, विभाग अमूरे आमा विभाग, प्रकाशन और मजलिस अनसारुल्लाह के दफ़्तर हैं। निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रहायश गाह पधारे। सवा तीन बजे हुज़ूर अनवर अपनी रहायश गाह से बाहर आए और कुछ देर के लिए दोस्तों के बीच रौनक अफरोज़ रहे। इस अवसर पर उन दोस्तों ने मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया जो पहले नहीं पहुंच सके थे।

इसके बाद आदरणीय अमीर जमाअत अहमदिया जर्मनी अब्दुल्लाह वागस हाउज़र साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज जर्मनी आदरणीय हैदर अली ज़फर साहिब, जनरल सैक्रेटरी आदरणीय इलियास के अहमद मजूका साहिब, सहायक जनरल सैक्रेटरी आदरणीय यहया साहिब आदरणीय डॉक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब, आदरणीय अब्दुल्ला सपुरा साहिब और आदरणीय सदर साहिब ख़ुद्दामुल अहमदिया अपनी ख़ुद्दाम सुरक्षा टीम के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। जर्मनी से यह दोस्त हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए काफिले के साथ आए थे।

तीन बजकर चालीस मिनट पर यहां से फ्रांस बंदरगाह Calais द्वारा प्रस्थान हुई और पांच बजकर पच्चीस मिनट पर चैनल टनल (Channel Tunnel) पर आगमन हुआ। जर्मनी से साथ आने वाले मित्रों और ख़ुद्दाम की सुरक्षा टीम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को चैनल टनल तक छोड़ने और विदा करने और अलविदा कहने के लिए काफिले के साथ ही रही। इस तरह बेल्जियम से आदरणीय अमीर साहिब बेल्जियम, आदरणीय हाफिज़ एहसान सिकंदर साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज बेल्जियम, आदरणीय असद मुजीब साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला और जनरल सैक्रेटरी, राजा अब्दुल साहिब, सैक्रेटरी संपत्ति, सदर मजलिस अंसारुल्लाह एन ए शमीम साहिब और सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया आदरणीय तौसीफ अहमद साहिब हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला को यहाँ से लंदन के लिए विदा करने के लिए काफिले के साथ आए।

## लंदन में आगमन और मस्जिद फज़ल लंदन में हार्दिक स्वागत

*पासपोर्ट, आव्रजन और अन्य दस्तावेजों की किलेयर होने के बाद काफिला वाहनों के द्वारा विशेष पार्किंग क्षेत्र में आकर रूका। ट्रेन के जाने में अभी कुछ समय था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए कार से बाहर आए।

छह बजकर पच्चीस मिनट पर काफिला की गाड़ियां ट्रेन में (board) हुईं। ट्रेन अपने समय 7 बज कर 20 मिनट पर Calais ब्रिटेन के तटीय शहर Dover की ओर रवाना हुई। लगभग आधे घंटे की सफर के बाद ट्रेन चैनल टनल पार कर Dover के पास के ब्रिटेन की भूमि में प्रवेश किया और अपने विशिष्ट स्टेशन पर रुकी। करीब दस मिनट के अंतराल के बाद फ्रांस के समय के अनुसार 8 बजे और ब्रिटेन के समय के अनुसार 7 बजे काफिला की गड़ियां ट्रेन से बाहर आईं और मोटरवे पर सफर शुरू हुआ। (ब्रिटेन का समय फ्रांस के समय से एक घंटा पीछे है)

आदरणीय मंसूर अहमद शाह साहिब नायब अमीर जमाअत यू के, आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज यू. के, आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा वकास अहमद साहिब सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया यू. के, आदरणीय डॉक्टर एजाज़ रहमान साहिब सदर मजलिस अंसारुल्लाह यू के, आदरणीय मिर्ज़ा महमूद अहमद साहिब सेंट्रल आडीटर, आदरणीय मिर्ज़ा नासिर इनआम साहिब प्रिंसिपल जामिया अहमदिया यू.के, आदरणीय मुबारक अहमद ज़फर साहिब अतिरिक्त वकील माल लंदन, आदरणीय अख़लाक अहमद अंजुम साहिब (कार्यालय वकालत तबशीयर, लंदन), आदरणीय मुनीर जावेद साहिब (मुबल्लिग़ सिलसिला कार्यालय निजी सैक्रेटरी), आदरणीय सैयद मुहम्मद अहमद साहिब उप अधिकारी रक्षा सुरक्षा टीम के साथ और अन्य जमाअत के पदाधिकारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत करने के लिए मौजूद

पृष्ठ 8 पर शेष

## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ
(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

## ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**
Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186
Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab
For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad